वर्ष २०२३

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र

उज्याऊ पत्रिका सप्तम अंक

थियोडोलाइट

विकोणमान या थियोडोलाइट उस यंत्र को कहते है जो पृथ्वी की सतह पर स्थित किसी बिंदु पर अन्य बिन्दुओं द्वारा निर्मित क्षैतिज और उर्ध्व कोण पढने से होता है जिसके लिए थियोडोलाइट ही सबसे अधिक यथार्थ फल देने वाला यन्त्र है | अतः यह सर्वेक्षण क्रिया का सबसे महत्वपूर्ण यन्त्र है|

थियोडोलाइट क्षैतिज और और ऊर्ध्वाधर दोनों तरह के कोणों को मापने का उपकरण है, जिसका प्रयोग, त्रिकोंणमितीय नेटवर्क में किया जाता है | यह सर्वेक्षण और दुर्गम स्थानों पर किये जाने वाले इंजीनियरिंग काम में प्रयुक्त होने वाला सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है | आजकल विकोणमान को अनुकूलित कर विशिष्ट उद्देशयों जैसे की मौसम विज्ञान और राकेट प्रक्षेपण प्रोद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भी उपयोग में लाया जा रहा है |

गृह-पत्रिका उज्याऊ (सप्तम अंक)

वर्ष २०२३

संरक्षक

संदीप श्रीवास्तव
निदेशक,राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र

संपादक मंडल

श्री अरुण कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

श्री एस० एस० रावत
मानचित्रकार श्रेणी-I

श्रीमति सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

श्री प्रतीक्ष्य तिवारी
सर्वेक्षक

संपादक मंडल का लेखको के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है क्योकि रचनओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं |

सुनील कुमार
Sunil Kumar
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37,
देहरादून –248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. – 37,
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र अपने कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "उज्याऊ" के सप्तम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

विभाग में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक सार्थक प्रयास है। पत्रिका "उज्याऊ" में छपी रचनाएँ लेखकों की हिंदी के प्रति समर्पित भावना तथा उनके मन की सृजनात्मक शक्ति की परिचायक हैं । "उज्याऊ" पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किया जा रहा प्रयास निदेशालय के अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाने का दर्पण है । हमारे लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं ।

आशा है कि राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र परिवार की रचनात्मकता को प्रतिबिंबित करती पत्रिका "उज्याऊ" का प्रकाशन आगे भी होता रहेगा।

26/12/23

(सुनील कुमार)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel:- +91-135-2744268/2747051-58 Extn -5001
E-mail : sgi.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

DST@ 1971-2021 DEPARTMENT OF SCIENCE & TECHNOLOGY

ईमेल/ E-mail : zone.spl.soi@gov.in
दूरभाष : 0135 – 2977976
Phone : 0135 - 2977975
: 0135 - 2977980
फैक्स/ Fax : 0135 – 2977970

अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र का कार्यालय
OFFICE OF ADDITIONAL SURVEYOR GENERAL, SPECIALIZED ZONE
ब्लाक 6, हाथीबड़कला एस्टेट
Block 6, Hathibarkala Estate
देहरादून-248001, (उत्तराखंड)
Dehra dun-248001, (Uttarakhand)

इस पत्र का उत्तर, विशिष्ट क्षेत्र के कार्यालय के पते से भेजना चाहिए, किसी अधिकारी के नाम से नहीं। उत्तर देते समय इस पत्र की सं. और दिनांक दी जानी चाहिए।
Any reply to this letter should be addressed to the SPECIALIZED ZONE, not to any officer by name, The No. & date of the letter should be quoted.

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय भू- स्थानिक आंकडा केन्द्र द्वारा अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका 'उज्याऊ' के सप्तम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्राचीनकाल से ही हिंदी ने सभी प्रांतीय भाषाओं के साथ स्वंय को समाहित कर भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने के पथ पर अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है। चूँकि हमारे संविधान द्वारा हिंदी, राजभाषा के रूप में स्वीकार्य है अत: यह हमारा परम दायित्व है कि हम सरकारी प्रयोजनों एवं अपने दैनिक जीवन में भी अपनी राजभाषा के प्रति सम्मान प्रदर्शित कर उसका अधिक से अधिक उपयोग करने का प्रयास करें। हिंदी सरल व मृदु भाषा होने के साथ- साथ देश को एक सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका का दायित्व भी निभाती है।

हिंदी भाषा के प्रचार में गृह पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। गृह पत्रिकाएं अधिकारियों/ कर्मचारियों में लेखन के प्रति उनकी प्रतिभाओं को उजागर करने का सशक्त मंच है जिसके द्वारा उनकी लेखन क्षमता को गति मिलती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, रचनाकारों एवं पत्रिका को मूर्तरूप देने में प्रयासरत प्रत्येक व्यक्ति को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(डॉ० यू० एन० मिश्र)
अपर महासर्वेक्षक
विशिष्ट क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष / Telephone: 0135 2977974

प्रतिकृति / Fax: 0135-2977976

ई–मेल / E-mail: ngdc.soi@gov.in

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
NATIONAL GEO-SPATIAL DATA CENTRE
ब्लाक 6, हाथीबड़कला एस्टेट, पत्र पेटी सं. 200
Block 6 , Hathibarkala Estate, Post Box No. 200 देहरादून
(उत्तराखंड) Dehra Dun– 248001 (Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र, देहरादून के अधिकारियों व कर्मचारियों के प्रयास द्वारा कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'उज्याऊ' के सप्तम अंक का प्रकाशन हुआ है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु हिन्दी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन एक सराहनीय व सार्थक कदम है। मुझे दृढ विश्वास है कि यह पत्रिका अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं सुधी पाठकों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के प्रति आस्था को सुदृढ करेगी। पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य भी जनमानस को हिन्दी के दैनिक जीवन मे व लेखन में प्रयोग हेतु प्रोत्साहित व प्रेरित करना है। हमारी राजभाषा होने के साथ ही भारत जैसे विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक मंच में लाने में हिन्दी की महत्वपर्ण भूमिका सदा ही रही है।

मै पत्रिका की निरंतरता बनाए रखने के लिए, 'उज्याऊ' के सप्तम अंक से जुड़े संपादक मंडल, रचनाकारों तथा साथ ही साथ प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(संदीप श्रीवास्तव)
निदेशक
राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र

सम्पादकीय

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र की हिन्दी वार्षिक पत्रिका के सप्तम अंक को अपने सुधी पाठकों के हाथों में सौपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष व गौरव की अनुभूति हो रही है।

हमारी वार्षिक पत्रिका 'उज्याऊ' की रचनाएं हमारे राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र के कार्मिकों व उनके परिवारजनों के द्वारा ही सृजित है, जो हमारे कार्यालय के कार्मिकों के हिन्दी के प्रति प्रेम को प्रतिबिंबित करती है। जिसके लिए प्रत्येक रचनाकार बधाई के पात्र है।

राजभाषा हिन्दी अपनी सरलता के कारण ही जन–जन के जीवन मूल्यों को सेतुबद्ध करती विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी प्रदान करती है अतः हमारी राजभाषा हिन्दी को अपने जीवन में आत्मसात करना, उसके गौरव में वृद्वि करना और उसके प्रति सम्मान प्रकट करना ही पत्रिका को मूर्तरूप देने का मुख्य उद्देश्य भी है।

राष्ट्रीय भू–स्थानिक आंकडा केन्द्र के निदेशक एवं पत्रिका के संरक्षक संदीप श्रीवास्तव जी की मै विशेष आभारी हूँ जिन्होने पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी विवेकपूर्ण सलाह एवं मार्गदर्शन बनाए रखा सम्पादक मण्डल के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक (हिंदी अधिकारी), श्री एस० एस० रावत मानचित्रकार श्रेणी–, एवं श्री प्रतीक्ष्य तिवारी, सर्वेक्षक का भी विशेष धन्यवाद जिन्होने पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपना अमूल्य समय दिया व सभी को रचनाएं लिखने व देने हेतु प्रेरित किया। विगत सात वर्षो से मै पत्रिका के सम्पादन कार्य से जुड़ी हूँ। यह तथ्य मुझे नित्य ही गौरव की अनुभूति कराता है।

हम अपने सुधी पाठको से आशा करते है कि वे सदा की भाँति अपने विचारों व सुझावों से हमे प्रोत्साहित करेंगे जो भविष्य में पत्रिका को अत्याधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

गृह–पत्रिका 'उज्याऊ' (सप्तम अंक)–2023

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख / कविता	लेखक	पृष्ठ संख्या
१	साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा (लेख)	हरी सिंह (मानचित्रकार श्रेणी I)	7
२	अनुसरणीय बाते	चंचल घोष, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	9
३	जिंदगी	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	9
४	मेरा बचपन	जसबीर सिंह, एम०टी०एस	10
५	माता पिता का एक छोटा पैगाम अपने पुत्र के नाम	जसबीर सिंह, एम०टी०एस	10
६	चंद्रयान–3 चंद्र अन्वेषण के लिए भारत की खोज (लेख)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–I	12
७	अनमोल विचार	धानेश्वर कुमार दास, पटल चित्रक वर्ग– IV	13
८	जीने की असली उमर	प्रदीप कुमार वर्मा, निजी सचिव, विशिष्ट क्षेत्र कार्यालय	14
९	राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एन० एल० एम) (लेख)	साबर सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	15
१०	वृक्ष की पुकार (कविता)	नवीन चंद्र नैथानी, डिजिटाईजर	17
११	परित्यक्ता (कहानी)	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	19
१२	हिन्दू धर्म में देवी देवता (लेख)	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	20
१३	जलवायु परिवर्तनः– पृथ्वी बचाने के लिए 6 वर्ष (लेख)	विजय सिंह भंडारी,कम्पयूटर टाईपिस्ट	22
१४	सरकारी तंत्र को कैसे मजबूत बनाया जाए (लेख)	जसबीर सिंह, एम०टी०एस	24
१५	भारत का गगनयान मिशनः अग्रणी मानव अंतरिक्ष उड़ान (लेख)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–I	25
१६	नन्ही जल की बूंदें (कविता)	अदिती, पुत्री श्री वेद प्रकाश	26
१७	जोशीमठ (लेख)	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	28
१८	भारत की उभरती अर्थव्यवस्थाः विकास और अवसरों की यात्रा (लेख)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी–I	29
१९	गोल गोल पानी	अदिती, पुत्री श्री वेद प्रकाश	30
२०	मुन्नार हिल स्टेशन (यात्रा संस्मरण)	अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	31
२१	सुविचार	ममता तोमर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	34
२२	आदित्य एल 1 का महत्व (लेख)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी– I	35
२३	भटकता बचपन (लेख)	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	36
२४	G20 2023 मे भारत की भूमिका (लेख)	अरूण तेश्वर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	38
२५	बधांणगढ़ी (लेख)	बलवंत सिंह, सर्वेक्षण सहायक	39
२६	रोज 5 मिनट	प्रदीप कुमार वर्मा, निजी सचिव विशिष्ट क्षेत्र कार्यालय	40
२७	जोशीमठ भू–धसाव (लेख)	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	41
२८	जीवन में गुरू का महत्व (लेख)	जसबीर सिंह, एम०टी०एस	41
२९	लोकोक्ति	उपदेश कुमारी, सर्वेक्षक	42
३०	देहरादून से तुंगनाथ तक की यात्रा (यात्रा संस्मरण)	मोहित भट्ट, डिजिटाईजर	43
३१	सौर मिशन आदित्य एल1 (लेख)	सतेन्द्र सिंह रावत, मानचित्रकार श्रेणी– I	45
३२	अंग्रेजी का बुखार (कविता)	जसबीर सिंह, एम०टी०एस	45
३३	समानता की मूर्ति (रामानुज) (लेख)	अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	46

साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा

हरी सिंह
(मानचित्रकार श्रेणी I)

वर्तमान परिदृश्य में साइबर अपराध जैसे शब्द प्रायः सुनने को मिलते है, तो जिज्ञासा बढती है कि आखिर यह साइबर अपराध है क्या? किसी व्यक्ति द्वारा इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल कम्प्यूटर या किसी अन्य स्मार्ट उपकरण का प्रयोग करते हुए किसी व्यक्ति संगठन या सरकार का डाटा चोरी करके धोखाधड़ी पहचान चोरी या साइबर स्टाकिंग सिस्टम को नष्ट करके हानि पहुँचाने का आपराधिक कृत्य ही साइबर अपराध होता है। साइबर विशेषज्ञों के अनुसार साइबर अपराध के कई प्रकार होते हैं, वेब हाइजैकिंग, अनधिकृत पहुँच एवं हैकिंग, साइबर स्टाकिंग और वायरस अटैक इनमें मुख्य है। ये अपराध ऐसे व्यक्ति द्वारा किये जाते हैं जिसे कम्प्यूटर और इंटरनेट की बहुत अच्छी जानकारी होती है। इन अपराधियों को हैकर्स कहा जाता है ये अपराधी विभिन्न वायरस का प्रयोग करके किसी भी व्यक्ति संगठन या देश को हानि पहुँचा सकते हैं। इन वायरस में मुख्यत रेनसमवेयर, मालवेयर, स्पाइवेयर और एडवेयर है। रेनसमवेयर वायरस साइबर अपराधियों द्वारा किसी अन्य कम्प्यूटर मोबाइल या सिस्टम में हमला करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह कम्प्यूटर में पड़ी फाइल्स को नुकसान पहुँचाता है, पूर्णतः कम्प्यूटर, मोबाइल या सिस्टम को निष्क्रिय कर देता है। उसे पुनः सक्रिय करने के लिए धनराशि की वसूली करता है। मालवेयर एक प्रकार कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर ही होता है जिसे हम (Malicious Software) मैलिसियस सॉफ्टवेयर भी कहते हैं यह एक प्रकार का दूषित सॉफ्टवेयर है जिसका मकसद ही होता है लोगों के कम्प्यूटर को हानि पहुँचाना, इसके अन्य मकसद भी हो सकते हैं जैसे डाटा चुराना, पासवर्ड चुराना या डिलीट करना। किसी कम्प्यूटर मोबाइल में यह कई प्रकार से आ सकता है जैसे किसी अविश्वसनीय वेबसाइट से या स्वयं की गलती से डाउनलोड हो जाए या किसी अनजान ई-मेल के अटैचमेण्ट को खोलने पर या किसी Pirated Software को Free download करने पर।

स्पाईवेयर (Spyware) का काम होता है आपके द्वारा आपके कम्प्यूटर में की गई सभी एक्टिविटीज और डाटा पर नजर रखना और उन्हें किसी और के पास भेजना। स्पाईवेयर को किसी खास व्यक्ति, जगह या किसी खास कम्प्यूटर नेटवर्क को निशाना बनाकर बनाया जाता है इसका काम आपके कम्प्यूटर पर एक जासूस की तरह नजर रखना होता है एडवेयर (Adware) वायरस का खतरा, मोबाइल या कम्प्यूटर पर आनलाइन गेम्स खेलने पर होता है।

आज के वर्तमान दौर में इंटरनेट के बिना जीवन की परिकल्पना कुछ अधूरी सी लगती है साइबर उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ने के साथ-साथ साइबर अपराध की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स, क्लाउड कम्प्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और 5G जैसी सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग बढ़ने के साथ साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है। साइबर सुरक्षा के जानकारों के अनुसार दुनिया में लगभग 70% वेबसाइट हैकिंग की शिकार है, एक हैक का पता लगाने में लगभग 240 दिन का समय लग जाता है। साइबर अपराधों के मामले में अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरे पायदान पर है।

21वीं सदी में साइबर जासूसी, साइबर अपराध साइबर आतंकवाद, और साइबर युद्ध जैसे बढ़ते खतरे के साए में साइबर दुनिया को सुरक्षित बनाना आज विश्व के सामने एक बड़ी चुनौती बन गया है। भारत सरकार भी अपने देश और देशवासियों के डिजिटल डाटा की सुरक्षा को लेकर सतर्क हैं। साइबर अपराधों के कृत्यों से डिजिटल डाटा की सुरक्षा ही साइबर सुरक्षा कहलाती है। भारत सरकार द्वारा विभिन्न स्तरों पर साइबर जागरूकता कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। भारतीय दण्ड संहिता में साइबर अपराध एक्ट एवं प्रावधानों को जोड़ा गया है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 ऐसा ही साइबर अपराधों से निपटने का प्रावधान है, जिसके अन्तर्गत 43, 43ए, 66, 66बी, 66सी, 66डी, 66ई, 66एफ, 67, 67ए, 67बी, 70, 72 और 74 धाराएं सम्मिलित है।

डिजिटल डाटा की सुरक्षा को देखते हुए ही जून 2020 में भारत सरकार ने 60 से अधिक चीनी मोबाइल ऐप पर प्रतिबंध लगा दिया था। सरकार का दावा था कि ये ऐप कम्पनियां भारतीयों के डाटा को चोरी कर रही थी। भारत में इंटरनेट आधारित कारोबार और सेवायें प्रदान करने वाली सैकड़ों देशी और विदेशी कंपनियां काम कर रही हैं। अतः आवश्यक है कि भारत सरकार ऐसी कंपनियों पर निगरानी रखने के लिए ऐसा निगरानी सिस्टम विकसित करे जो इन कंपनियों पर पैनी नजर रख सके। तथा जिन कंपनियों की गतिविधियां संदिग्ध नजर आये उन पर कानूनी कार्यवाही की जा सके, इसके अतिरिक्त भारत

में कई ऐसी विदेशी कंपनिया भी सेवायें दे रही हैं जिनका सर्वर भारत में नहीं है ऐसी कंपनियों पर निगरानी रखना भी बड़ी चुनौती है।

सरकार द्वारा साइबर सुरक्षा की चुनौती के मद्देनजर राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 जारी की जिसके अन्तर्गत सरकार ने अति संवेदनशील सूचनाओं के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय अति संवेदनशील सूचना अवसंरचना संरक्षण केन्द्र का गठन किया। सरकार द्वारा कम्प्यूटर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर की मानक एजेन्सी "कम्प्यूटर इमरजेंसी रिस्पांस टीम" की स्थापना की गई। विभिन्न स्तरों पर सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन विकसित करने के उद्देश्य से सरकार ने सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता परियोजना प्रारम्भ की। भारत सूचना साझा करने और साइबर सुरक्षा के सन्दर्भ में सर्वोत्तम कार्य प्रणाली अपनाने के लिए अमेरिका ब्रिटेन और चीन जैसे देशों के साथ समन्वय कर रहा है। देश में साइबर अपराधों से सम्बन्धित योजनाओं को और प्रभावी तरीके से निपटने के लिए साइबर स्वच्छता केन्द्र भी स्थापित किया गया है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत भारत सरकार की डिजिटल इंडिया मुहिम का हिस्सा है।

केवल सरकारी संस्थाओं के प्रयासों से ही साइबर अपराधों के शिकार बनने से सामान्य इंटरनेट उपभोक्ता बच जायेगा यह अकल्पनीय है अतः साइबर सुरक्षा के महत्व को हर इंटरनेट उपभोक्ता को जानना अति आवश्यक है। अतः जो इंटरनेट उपभोक्ता किसी न किसी रूप में इंटरनेट द्वारा सूचनाओं का आदान प्रदान करता है। उसको अपने मोबाइल कम्प्यूटर को साइबर अपराधियों से सुरक्षित रखना आवश्यक है। ताकि उसकी किसी सूचना, डाटा का दुरूपयोग न हो। तथा बैंक में जमा धनराशि में सेंध न लगे। सभी इंटरनेट उपभोक्ताओं को निम्न कुछ सुझावों को जरूर अपनाना चाहिए-

(1) अपने मोबाइल या कम्प्यूटर के Operating system को सदैव update रखना चाहिए।
(2) मोबाइल या कम्प्यूटर में अच्छी विश्वसनीय कम्पनी का antivirus software प्रयोग करना चाहिए। तथा इस को समय पर update करना चाहिए ताकि वह साइबर अपराधियों के द्वारा भेजे गये दूषित सॉफ्टवेयर वायरस के हमले से मोबाइल या कम्प्यूटर के data को बचा सके।
(3) ई-मेल एवं बैंक से ऑनलाइन लेन देन का पासवर्ड मजबूत होना चाहिए।
(4) अनजान ई-मेल अटैचमेन्ट को बिल्कुल नहीं खोलना चाहिए।
(5) Pirated software को free download के झांसे में नहीं आना चाहिए।
(6) किसी भी स्थान पर free wi-fi के प्रयोग की प्रवृत्ति नहीं बनानी चाहिए।

इन कुछ सुझावों का पालन करते हुए इंटरनेट उपभोक्ता अपने स्वयं के निजी डाटा की सुरक्षा कर सकता है। सतर्कता पूर्ण व्यवहार और सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन ही केवल उपाय है जिससे साइबर अपराधों से बचा जा सकता है।

वर्तमान भारत कैशलेस अर्थव्यवस्था की दिशा में अग्रसर है। ऐसे परिदृश्य में समावेशी डिजिटल भारत के सपने को साकार करने के लिए कुशल और सुरक्षित साइबर इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य करना होगा, इसके लिए सामान्य जन मानस को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरुक रहकर सरकारी संस्थाओं के प्रयासों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। निष्कर्ष यह है कि साइबर अपराधियों के अपराध का शिकार न होने का मूल मंत्र यह है कि साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल का निरन्तर पालन किया जाए।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछितात।

अर्थः रहीम कहते हैं कि उपयुक्त समय आने पर वृक्ष में फल लगता है। झड़ने का समय आने पर वह झड़ जाता है, सदा किसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती, इसलिए दुःख के समय पछताना व्यर्थ है,

अनुसरणीय बाते

चंचल घोष
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

अगर इंसान शिक्षा से पहले संस्कार, व्यापार से पहले व्यवहार,
भगवान से पहले माता पिता को पहचान ले तो
जिन्दगी में कभी कोई कठिनाई नही आयेगी।
किस्मत लेकर आना और कर्म लेकर जाना,
बस इसी का नाम जिन्दगी है।
जीवन में अपना व्यक्तित्व शून्य रखिये,
ताकि कोई उसमें कुछ घटा ना सके,
परन्तु जिसके साथ खड़ा हो जाएं उसकी
कीमत 10 गुणा बढ जायें।

शब्द कितनी भी 'समझदारी' से इस्तेमाल किये जायें.....
फिर भी सुनने वाला अपनी योग्यता और मन के विचारों के अनुसार ही उनका मतलब समझता और निकालता है।
पैसा मानव इतिहास की सबसे खराब खोज है, लेकिन मनुष्य के चरीत्र को परखने की सबसे विश्वसनीय सामग्री है।
अपने स्वभाव को हमेशा सूर्य की तरह रखिये, न उगने का अभिमान न डूबने का डर.....

****

जिंदगी

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

बमनुष्य का जन्म जब होता है तो उसे अपने जिंदगी के बारे में कोई ज्ञान नही होता है जैसे– जैसे वह बड़ा होता है। और जीवन के 35–40 वर्ष पूर्ण करने पर उसे अनेक प्रकार की परिस्थिति समस्याओं से उलझना पड़ता है जिसे मनुष्य को इस कविता को कवि द्वारा इस प्रकार से समझाया गया हैः–

खुश रहकर गुजारो, तो मस्त है जिंदगी।
दुखी रहकर गुजारो, तो त्रस्त है जिंदगी।
तुलना में गुजारो तो, पस्त है जिंदगी।
इन्तजार मे गुजारो तो सुस्त है जिंदगी।
दिखावे में गुजारो, तो बर्बाद है जिंदगी।
सीखने में गुजारो, तो किताब है जिंदगी।
मिलती है एक बार, प्यार से बिताओ जिंदगी।
जन्म तो रोज होते है यादगार बनाओ जिंदगी।
ईश्वर से ध्यान लगाओ, तो प्रकाशमय है जिंदगी।

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार से मुक्त और सुन्दर मन वालों का देश बनाना है तो मेरा दृढतापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कर सकते है, पिता, माता और गुरू।

–डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम

मेरा बचपन

जसबीर सिंह
एम०टी०एस

मेरे बचपन के दिन बहुत ही अच्छे और सुहावने थे। यह दिन किसी जन्नत से कम नही थे। इन दिनों में मैने बहुत मस्तियां और शैतानियां की थी। बचपन के वो दिन कभी भी भुलाए नहीं जा सकते। मै बचपन में बहुत शरारती और चंचल था। जिसके कारण मुझे कभी–कभी डाँट भी पड़ती थी तो उतना ही प्यार और दुलार मिलता था। बचपन के वो दिन बहुत ही खुशियों से भरे हुए थे। तब ना किसी भी बात की चिंता थी और ना ही किसी से कोई मतलब। बस अपने में ही खोए रहते थे। बचपन में जब कोई मुझे डांटता था तो मै अपनी माँ के आँचल में जाकर छुप जाता था मैं माँ की लोरियाँ सुनकर ही सोता था लेकिन अब वह सुकून भरी नींद नही नसीब होती। बचपन के वो सुनहरे दिन जब हम खेलते रहते थे तो पता ही नही चलता था कब दिन होता और कब रात हो जाती, बहुत याद आते हैं। मेरे बचपन बहुत ही आंनदमय रहा है जिसमें ना कोई भय था ना ही कोई फिक्र थी। हमेशा अपनी मर्जी चलती थी, काश! मै एक बार फिर से बच्चा बन सकता और अपना बचपन दोबारा जी सकता।

माता पिता का एक छोटा पैगाम अपने पुत्र के नाम

जसबीर सिंह
एम०टी०एस

- जिस दिन तुम हमें बूढ़ा देखो तब सब्र करना और हमे समझने की कोशिश करना। जब हम कोई बात भूल जाए तो हम पर गुस्सा ना करना और अपना बचपन याद करना।
- जब हम बीमार हो जाए तो वो दिन याद करके हम पर अपने पैसे खर्च करना।
- जब हम तुम्हारी ख्वाहिशें पूरी करने के लिए अपनी ख्वाहिशें कुर्बान करते थे।
- जब हम बूढ़े होकर चल ना पाए तो हमारा सहारा बनना और अपना पहला कदम याद करना।
- जब हमारे आँखो में आँसू देखना तो वह दिन याद करना, जब तुम रोते थे, तो सीने से लगाकर चुप कराते थे।
- जब हम ठंड से ठिठुर रहें हो तो बिना कोई देर किए हमारे ऊपर रजाई और कम्बल डाल देना। वह दिन याद करना जब तुम ठंड के दिनो में पैरों से रजाई नीचे गिरा देते थे और ठंडा लगने पर रोते थे, तो हम अपने कलेजे से लगाकर तुम्हें फिर रजाई ओढ़ाते थे।

ओछे को सतसंग रहिमन तजहु अंगार ज्यों,
तातो जारै अंग सीरै पै कारौ लगै,

अर्थः ओछे मनुष्य का साथ छोड़ देना चाहिए, हर अवस्था में उससे हानि होती है–जैसे अंगार जब तक गर्म रहता है तब तक शरीर को जलाता है और जब ठंडा कोयला हो जाता है तब भी शरीर को काला ही करता है।

श्रेया सुमन
पुत्री बिपिन कुमार

आन्या सिंह
पुत्री श्रीमती सीमा सिंह

चंद्रयान-3: चंद्र अन्वेषण के लिए भारत की खोज

सतेन्द्र सिंह रावत
मानचित्रकार श्रेणी–I

चंद्रयान-3 मिशन वैज्ञानिक अन्वेषण और तकनीकी उन्नति के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। चंद्रयान श्रृंखला की तीसरी किस्त के रूप में, यह चंद्र मिशन चंद्रमा की संरचना, भूविज्ञान और संभावित संसाधनों के बारे में हमारी समझ को और विस्तारित करने का वादा करता है।

चंद्रयान-3 मिशन अपने पूर्ववर्तियों चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2 के नक्शेकदम पर चलता है, इन दोनों ने चंद्रमा के बारे में हमारे ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 2008 में लॉन्च किए गए चंद्रयान-1 ने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं की खोज करके इतिहास रच दिया, जिससे चंद्रमा के बारे में हमारी धारणा एक शुष्क आकाशीय पिंड के रूप में बदल गई। इसके बाद, 2019 में लॉन्च किए गए चंद्रयान- 2 का लक्ष्य एक ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर को शामिल करके इस नींव पर निर्माण करना था। जबकि ऑर्बिटर सफलतापूर्वक मूल्यवान डेटा भेज रहा है, लैंडर विक्रम ने अपने वंश के दौरान संचार खो दिया, जिससे चंद्रयान- 3 की आवश्यकता महसूस हुई।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) इसरो (और भारतीय निजी क्षेत्र का संयुक्त प्रयास चंद्रयान-3 वैज्ञानिक सफलताओं की अपार संभावनाएं रखता है। इसके प्राथमिक लक्ष्यों में से एक चंद्रमा की सतह पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग हासिल करना है, विशेष रूप से दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र को लक्षित करना, जो अपने संभावित जल बर्फ जमाव के कारण बहुत रुचि रखता है। ये बर्फ भंडार न केवल चंद्रमा के इतिहास को दर्शाते हैं बल्कि आजीविका के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करके भविष्य के मानव मिशनों का समर्थन करने का वादा भी करते हैं।

चंद्रयान-3 के तकनीकी पहलू भी उतने ही उल्लेखनीय हैं। मिशन में चंद्रयान-2 के लैंडर दुर्घटना से सबक लेते हुए एक नए लैंडर और रोवर का विकास शामिल होगा। पिछली चुनौतियों का समाधान करके, इसरो का लक्ष्य एक सहज लैंडिंग सुनिश्चित करना है, जिससे रोवर को चंद्रमा की सतह का व्यापक रूप से पता लगाने की अनुमति मिल सके। इसके अलावा, रोवर चंद्रमा के रहस्यों को जानने के लिए डिज़ाइन किए गए कैमरे, स्पेक्ट्रोमीटर और सिस्मोमीटर सहित वैज्ञानिक उपकरणों का एक सेट ले जाएगा। ये उपकरण चंद्रमा की खनिज संरचना का अध्ययन करने, इसकी स्थलाकृति का मानचित्रण करने और यहां तक कि भूकंपीय गतिविधियों की निगरानी करने, चंद्रमा की भूभौतिकीय प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सहायता करेंगे।

चंद्रयान-3 की सफलता केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों के आधार पर नहीं मापी जाती। यह अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की शक्ति और निजी उद्यमों के साथ सहयोग करने की क्षमता का भी प्रतीक है। निजी क्षेत्र के साथ इसरो का सहयोग एक रणनीतिक कदम है जो न केवल नवाचार को बढ़ावा देता है बल्कि विकास की गति को भी तेज

करता है। यह तालमेल संभावित रूप से वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में नए अवसरों के द्वार खोल सकता है, जिससे अंतरिक्ष अन्वेषण क्षेत्र में एक विश्वसनीय और सक्षम खिलाड़ी के रूप में भारत की स्थिति और मजबूत होगी।

हालाँकि, किसी भी महत्वाकांक्षी प्रयास की तरह, चंद्रयान-3 को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सॉफ्ट लैंडिंग की पेचीदगियां, विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण चंद्र वातावरण में, सटीकता और मजबूत इंजीनियरिंग की मांग करती हैं। इसरो के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को न केवल तकनीकी बाधाओं पर काबू पाने का काम सौंपा गया है, बल्कि संचार प्रणालियों की विश्वसनीयता भी सुनिश्चित की गई है, जो लैंडर और रोवर के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षतः, चंद्रयान-3 मिशन भारत के ज्ञान, नवाचार और सहयोग की खोज का प्रतीक है। अपने पूर्ववर्तियों की उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए और उनकी कमियों को सुधारते हुए, चंद्रयान-3 चंद्रमा के रहस्यों में अभूतपूर्व अंतर्दृष्टि प्रदान करने की क्षमता रखता है। इसकी सफलता न केवल चंद्र विज्ञान के बारे में हमारी समझ को आगे बढ़ाएगी बल्कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में भारत की क्षमताओं को भी प्रदर्शित करेगी। जैसे ही चंद्रयान-3 अपनी यात्रा पर निकलता है, यह एक राष्ट्र की आकांक्षाओं और मानवता की जिज्ञासा को खोज की नई सीमाओं की ओर ले जाता है।

****

अनमोल विचार

कोई बदल जाए तो दुःखी मत होना क्योकि बदलना प्रकृति का नियम है।
जब जिंदगी में कुछ भी समझ ना आए तो सब कुछ परमात्मा पर छोड़ दो।
परमात्मा से कुभी कुछ मत मांगो क्योकि वह जानता है आपको क्या देना है।
बुरे समय में यह मत सोचो कि कौन साथ देगा बल्कि यह सोचो कि अब कौन साथ छोड़कर जाएगा।
अगर परमात्मा खुश हो तो वह सरताज बना देता है अगर रूठ जाए तो दर–दर का मोहताज बना देता है।

पक्षी एक–एक अन्न खाने के खातिर सौ सौ बार सर झुकाता है और एक इंसान है जो सौ बार खा कर भी एक बार परमात्मा का शुक्रिया नही करता।

धानेश्वर कुमार दास
पटल चित्रक वर्ग– IV

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा में नही चलेगा तब तक यह नही कह सकते देश में स्वराज है।

–मोरारजी देसाई

हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है।

–गौतम बुद्ध

जीने की असली उमर

प्रदीप कुमार वर्मा
निजी सचिव
विशिष्ट क्षेत्र कार्यालय

जीने की असली उमर तो साठ है
बुढ़ापे में ही तो असली ठाठ हैं।

न बचपन का होमवर्क, न जवानी का संघर्ष,
न चालीस की परेशानियां,
बेफिक्र दिन और सुहानी रात है।
जीने की असली उमर तो साठ है,
और बुढ़ापे में ही तो असली ठाठ हैं

न स्कूल की जल्दी, न ऑफिस की किटकिट,
न बस की लाइन, न ट्रॉफिक का झमेला,
सुबह बाबा रामदेव का योगा और दिनभर खुली धूप,
दोस्तोÓयारों के साथ राजनीति पर चर्चा आम है।
जीने की असली उमर तो साठ है,
और बुढ़ापे में ही तो असली ठाठ हैं।

न मम्मी डैडी की डांट, न आफिस में बॉस की फटकार,
दोहते पोतों के खेल, बेटे और बहू का प्यार,
इज्जत से झुकते हैं सबके सर,
इसलिए आर्शीवाद और दुआओं की भरमार है।
जीने की असली उमर तो साठ है,
और बुढ़ापे में ही तो असली ठाठ हैं।

न स्कूल का डिसीप्लीन, न ऑफिस में बोलने की कोई पाबंदी,
न घर में बुजुर्गों की रोकटोक,
खुद बुजुर्ग हो गए इसलिए खुली हवा में हंसी के ठहाके,
बेफिक्र बातें, किसी को कुछ भी कहने के लिए आजाद हैं।
तभी तो कहते हैं कि जीने की असली उमर तो साठ है,
और बुढ़ापे में ही तो असली ठाठ हैं।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एन० एल० एम)

National Live Stock Mission

साबर सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

उत्तराखण्ड राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में पलायन व सुअर बंदरों की वजह से जमीने बंजर हो गई है। जमीन बंजर होने से यहां पर बेरोजगारी की समस्या से आमजन जूझ रहे है। इसी बंजर जमीन पर हरा चारा फार्म बना कर भेड़ बकरी पालन से बहुत अच्छा रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। बंजर पड़ी स्वंय की जमीन तथा गाँव के जमीन पर लीज लेकर **राष्ट्रीय पशुधन मिशन** योजना का लाभ उठाया जा सकता है। भेड़ बकरी पालन से आपकी आय अन्य कृषि उत्पादों से ज्यादा हो सकती है। आज बकरी के दूध की मांग बहुत है। डेंगू जैसी बीमारी में बकरी का दूध बहुत ही लाभदायक है। बकरी के दूध से प्लेटलेट्स तुरंत ही बढ़ जाते है। बकरी के दूध में जो प्रोटीन होता है उसे वेट लिफटिंग कर रहे जवान बहुत पसंद करते है। बकरी के दूध का पनीर, घी, वेट लिफ्टरों द्वारा बहुत पसंद किया जाता है। वेट लिफ्टर इसके लिए बहुत अच्छे दाम देते हैं। बकरी के दूध का घी राजधानी दिल्ली जैसे बड़े शहरों में 2500 रूपये किलों तक बिक रहा है। तथा बकरी के दूध की मिठाईयां विदेशों तक निर्यात की जा रही है। भेड़ के ऊन से गर्म स्वेटर और कपड़े बाजारों में बहुत ही महंगे बिक रहे हैं। भेड़ बकरी पालन करने से आप प्रकृति के पास रहते हैं। जिससे कई बीमारियों से आप प्राकृतिक रूप से ठीक हो जाते हैं और अपने आपको तरोताजा महसूस करते हैं। यह एक लाभदायक रोजगार है। बकरी पालन के लिए प्राकृतिक रूप से अत्यधिक उपयुक्त है। वैसे तो उत्तराखण्ड राज्य में ग्रामीणों द्वारा भेड़ बकरी पालन सीमित मात्रा में होता रहा है। यह ग्रामीणों की आय के मुख्य स्त्रोतों में से एक है। भेड़ बकरी पालन मरछयों द्वारा भी सैंकड़ों की संख्या में करा जाता हैं। जो कि बकरी पालन में प्रति दिन जंगलों में चलते हैं। वे बारह मास चलते हुए भेड़ बकरी पालन करते है। मारछे सर्दियों में बकरी चराते चराते तराई क्षेत्र कोट्द्वार भाबर ऋषिकेश देहरादून आदि स्थानों तक आते है, तथा गर्मी शुरू होने से पहले पहाड़ों पर जाना शुरू हो जाते हैं। मारछे बद्रीनाथ जी, केदारनाथ जी, गंगोत्री जैसी जगहों पर चाईना बार्डर तक बकरी चुगाते हैं। लेकिन यह काम बहुत ही कष्टदायक होता है। बारहों महीने खुले आसमान के नीचे सोना रात भर कुत्तों की मदद से बकरियों की चौकीदारी करनी पड़ती है। क्योकि ये रोज चलते हैं इसलिए ये अपने साथ ज्यादा सामान नहीं रख सकते। इसलिए इन्हे बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है।

बकरी पालन क्या है ? बकरी पालन एक पशु उत्पादन प्रणाली है जिसमें बकरियों को दूध, मांस, फाईबर के लिए उत्पादित किया जाता है। यह दुनिया के कई हिस्सों मे एक सामान्य कृषि गतिविधि है और जो लोग संबंधित ज्ञान और संसाधन रखते हैं वे इसे एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में कर सकते हैं। बकरी संभालना असमान्य नही हैं। इसे संभालना आसान है और किसानों के लिए मूल्यवान आय का स्त्रोत प्रदान कर सकता है।

बकरी पालन योजना हेतु सरकारी योजना कृषि और पशुपालन मंत्रालय द्वारा शुरू की गई **राष्ट्रीय पशुधन मिशन** एक योजना है जो पशुधन क्षेत्र के सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रारम्भ की गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य जाति गुणवत्ता और उत्पादनकता को सुधारना पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना और बुनियादी संरचना

विकास का समर्थन करना है। इस योजना का लक्ष्य छोटे और सीमांत किसानो विशेषकर महिलाओं के जीविकोपार्जन को सुधारकर मार्केट और क्रेडिट तक सुगम पहुंच प्रदान करना है।

भारत सरकार ने भेड़ बकरी पालन को बढ़ावा देने तथा इस व्यवसाय से स्वरोजगार उतपन्न करने के लिए एक (एन० एल० एम) योजना शुरू की है। जिसमें कि 10 लाख से पचास लाख तक अंशदान (सब्सिड़ी) प्रदान की जा रही है। इस योजना का लाभ सभी वर्ग के लोग तथा सरकारी कर्मचारी भी ले सकते है।

मिशन का उद्देशय

- राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एन० एल० एम) निम्नलिखित उद्देशयों को हासिल करना चाहता है।
- भेड़ बकरी, मुर्गी और सुअर के क्षेत्र और चारा क्षेत्र में उद्यमिता विकास के माध्यम से रोजगार उत्पन्न करना।
- जानवरों की प्रति उत्पादकता को ब्रीड सुधार के माध्यम से बढ़ाना।
- मांस, अंडे, बकरी दूध, ऊन और चारे के उत्पादन में वृद्धि करना।
- चारा और चारा के समर्थन की मांग को कम करने के लिए चारा बीज आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करके और प्रमाणित चारा बीज की उपलब्धता को बढ़ाकर सर्मथन को वृद्धि।
- समर्थन की मांग आपूर्ति को कम करने के लिए चारा प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित करना।
- किसानों के लिए पशुधन बीमा सहित जोखिम प्रबंधन उपायों को प्रोत्साहित करना।
- मुर्गी, भेड़, बकरी चारा, और चारे के प्राथमिक क्षेत्रों में लागू अनुप्रयोगिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।
- किसानों को गुणवत्ता पूर्ण प्रसार सेवा प्रदान करने के लिए सुदृढ़ संवर्धन मेकेनरी के माध्यम से राज्य के कर्मचारियों और पशुपालकों की क्षमता निर्माण।
- उत्पादन लागत को कम करने, पशुपालन क्षेत्र के उत्पादन को सुधारने के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकियों का प्रसार प्रोत्साहित करना।

योजना की जानकारी

न्यूनतम आवश्यकता इस योजना के लिए कम से कम 100 बकरी के साथ 5 बकरों की जरूरत होती है।

योजना की जानकारी

बकरी	बकरे	सब्सिडी	बैंक कर्ज	निजि अंशदान
100	5	10 लाख	8 लाख	2 लाख
200	10	20 लाख	16 लाख	4 लाख
300	15	30 लाख	24 लाख	6 लाख
400	20	40 लाख	32 लाख	8 लाख
500	25	50 लाख	40 लाख	10 लाख

इस योजना में जुड़ने के लिए मूल अनिवार्यता है कि आपको प्रति 100 बकरीयों पर 5 बकरे रखने की आवश्यक हैं, और यह योजना केवल 500 बकरियों तक के फार्म के लिए वैध है।

योजना के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज

आधार कार्ड
पैन कार्ड
पते का प्रमाण
यदि भूमि के दस्तावेज स्वामित्व में है।
यदि किराये की भूमि है तो वह 5 वर्ष की लीज पर होनी चाहिए।
भूमि प्रमाण पत्र
प्रशिक्षण प्रमाण पत्र
परियोजना रिपोर्ट
भूमि आवश्यकता
3600 वर्ग फुट
5500 वर्ग फुट

भेड़ बकरी पालन हमारे राज्य में रोजगार व एक अच्छी आय का स्त्रोत है। जिसे सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। हमें भी ग्रामीणों को प्रोत्साहित तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी देने की जरूरत है।

****

वृक्ष की पुकार

नवीन चंद्र नैथानी
डिजिटाईजर

अरे मूर्ख ! मानव सुन ले मेरी पुकार,
मैं हूं वृक्ष बड़ा ही लाचार।
जरा सुन ले मेरी पुकार,
मत चला हथियार,

अगर खड़ा रहूँगा आँगन मे तेरे,
तो फल दूँगा बार–बार।
छाया दूँगा मै तुझे,
जब होगा धूप से लाचार।

हरा भरा संसार मेरा,
मत कर बंजर–बेजार।
अरे मूर्ख सुन ले मेरी पुकार,
मत कर मुझे तार–तार।

क्योंकि मै तो हूँ वृक्ष बड़ा लाचार,
तू सुन ले मेरी पुकार।
मत कर मुझ पर अत्याचार,
मै हूँ वृक्ष बड़ा लाचार।

कृषिका दे
पुत्री श्री किशेर कुमार दे

परित्यक्ता

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

आज का दिन शाम्भवी के जीवन में अनमोल ख़ुशियाँ लेकर आया था | बेटी रिया का डॉक्टर में सलेक्शन के रिजल्ट के रूप में पूरे दिन घर में गहमागहमी थी व बधाई देने वालो का ताँता लगा रहा | अब कहीं जाकर उसे फ़ुर्सत मिली तो कुर्सी लेकर लॉन में बैठी थी | बेटी रिया ने माँ को गरमगरम चाय का कप पकड़ा कर कहा माँ अब आराम करो और पूछा मैं और प्रिया दीदी कुछ सहेलियों के साथ बाहर चली जाएँ ? माँ ने उन्हें सहर्ष स्वीकृति दी | अब कहीं जाकर शाम्भवी आराम से बैठी थी | चाय का घूंट भरते हुए मन अनायास ही विगत स्मर्तियों में खो गया | अतीत की करुण वेदना उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी, जो उसकी विगत जीवन की त्रासदी को बयाँ कर रही थी | अतीत की कड़वी यादें अक्सर ही उसके वर्तमान को उदासी में डुबो देती थी | " परित्यक्ता " यही वह शब्द था जिससे समाज उसे पहचानता था | यह शब्द जितना सुनने में है उससे असंख्य गुना मन मस्तिष्क को वेदना देता है | स्थिति कैसी रही हो कारण कुछ भी रहें हों हमारा समाज सदा इसके लिये स्त्री को ही जिम्मेदार ठहराता है | समाज की उपेक्षा उसके ताने और लांछन ही सबला को अबला बना देते हैं | इन्हीं सामाजिक बुराईयों से तंग आकर कितनी स्त्रियाँ अपनी इंहलीला भी समाप्त कर लेती हैं परंतु पारिवारिक संस्कारों व अटल आत्मविश्वास से लबरेज शाम्भवी उनसे अलग थी | अपनी कठिन मेहनत से जहाँ उसने स्वयम् के लिये समाज में एक स्थान बनाया था वहीं बड़ी बेटी प्रिया पहले ही डॉक्टर थी और आज छोटी बेटी ने भी डॉक्टर की परीक्षा में प्रवेश पाकर उसके मस्तक को समाज की नजरों में और ऊँचा कर दिया था |

अभी कल की ही तो बात लगती है जब गरीब परिवार मे जन्मी खूबसूरत सुशील और संस्कारवान शाम्भवी के गुणों से प्रभावित पटेल साहब ने उसे अपने पुत्र सोहन के लिये चुना था | आँखों में सुनहरे सपने सजाए सोहन की दुल्हन बनी शाम्भवी को ससुराल वालो ने पलकों पर बैठाया था | प्रतिष्ठित परिवार की बहु बन कर शाम्भवी अपने भाग्य पर अनायास ही इठलाती थी और भगवान का शुक्रिया अदा करना नहीं भूलती थी | आदर्श परिवार की आदर्श ही बहु थी वो | सुबह पाँच बजे से ही उठ कर सास ससुर, ननद देवर और पति की समस्त जिम्मेदारियाँ सहर्ष निभाती थी | रात ग्याराह बजे तक कार्यों से निवृत हो जाने तक, थक कर चूर चूर हो कर भी अगली सुबह से फिर वही दिनचर्या कभी उसके चेहरे पर शिकन नही आयी |

माँ बनना स्त्री के जीवन का सबसे सौभग्यशाली पल होता है | शाम्भवी के जीवन में भी इन्हीं ख़ुशियों की बयार बह रही थी | पूरे परिवार ने भी उसपर ज़्यादा ध्यान देना शुरु कर दिया था | आख़िर उनके वंश को चलाने वाला पुत्र आने वाला था ऐसा परिवारजनों का मानना था | हमारे देश में यह सदा से विडम्बना रही है कि यदि कोई महिला बच्चे को जन्म देने वाली हो तो उसका पूरा परिवार, रिश्तेदार व समाज भविष्यवेत्ता बन भविष्यवाणी कर देते हैं कि बेटा ही होगा | शाम्भवी के पूरे परिवार को भी उससे यही अपेक्षा थी | नियत समय पर शाम्भवी ने एक चाँद सी बेटी को जन्म दिया | यही वह पल था जब पूरे परिवार की आशाओं पर तुषारापात हो गया | बिटिया के जन्म के बाद ही पूरे परिवार ने गिरगिट की तरह रंग बदलना शुरु कर दिया | परिवार की भाषा में भी परिवर्तन आने लगा था | पुत्री पैदा होने के कारण ताना, उलाहना व दोषारोपण उस पर किया जाने लगा था | पारिवरिक उपेक्षा से जीवन दयनीय होने लगा परंतु शाम्भवी ने अपने दृढ़निश्चय से सबको सम्भाले रखा आखिरकार दो वर्ष पश्चात शाम्भवी फिर से माँ बनी, परंतु इस बार फिर बेटी का जन्म हुआ | अब तो पूरे परिवार के कोपभाजन से उसका बचना असम्भव था | प्रताड़ना का स्तर दिनोदिन बढ़ने लगा था तथा परिवार का स्तर गिरने लगा था | शाम्भवी को अपनी ग़लती नहीं सूझती थी | दोनो फूल सी बच्चियों को भी परिवार की दुत्कार मिलने लगी थी | छोटा होने के कारण बालमन यह समझने में भी असमर्थ था कि उनकी गलती क्या है | अब तो माँ –बाप के बहकावे मे आकर सोहन भी बच्चियों की छोटी छोटी गलतियों पर पिटाई कर देता यदि शाम्भवी समझाती तो उस पर भी हाथ छोड़ देता दोनो बेटियाँ सदा सहमी व दहशत में रहने लगी थी शाम्भवी सदा चिन्तित रहती थी कि उसकी बेटियों का आत्म्विश्वास निरंतर गिरता जा रहा था |

हद तो तब हो गयी जब एक दिन छ; वर्ष की प्रिया के हाथ से गिलास टूट गया | सास ने उठ कर उस नन्हीं सी बच्ची को जो धक्का दिया , प्रिया का सिर दीवार से जा टकराया, सोहन भी गुस्से से उठा और बेटी को पीटने लगा | रिया बीच में आयी तो उसकी भी पिटाई शुरू हो गयी | परंतु आज शाम्भवी के सब्र का बांध टूट गया था | उसने दृढ़ता से सोहन का हाथ रोक लिया, सोहन उसके दुस्साहस से हतप्रभ रह गया परंतु शाम्भवी ने कठोरता से कहा आप सब को शर्म आनी चाहिये, मासूम बेटियों को निर्ममता से मारने का साहस आपमें कहाँ से आया, लज्जा नहीं आती अपनेआप पर ? अपनी कुंठित व ओछी मानसिकता के कारण ही आप सब यह पाप कर पाये हैँ और आपका यह पाप अक्षम्य है | सोहन ने शाम्भवी पर भी हाथ उठाना चाहा परंतु आज उसके चंडी के अवतार से जैसे उसका साहस क्षीर्ण हो गया , बुद्धि तो पहले ही क्षीर्ण हो गयी थी | शाम्भवी बोली आज तक मैँ सोचती थी कि धीरेधीरे आप अपनी बेटियों के प्रति नफ़रत को कभी न कभी मिटा देंगें, परंतु

आज मेरा यह भ्रम टूट चुका है, जान चुकी हूँ कि आपकी ओछी सोच व निम्न मानसिकता को बदलना असम्भव है इसलिये आज अपनी बेटियों के के साथ यह घर छोड़ रही हूँ | मैँ नहीं चाहती आपके साथ रहकर मैँ अपनी बेटियों की आत्म्- विश्वास की नीव हिला दूँ जिससे वे भविष्य मे पूरे जीवन अपनेआप पर विश्वास न कर पाये और आत्म्- विश्वास के बिना मेरी तरह दासी का जीवन जीने को बाध्य रहें | मुझे अपनी बेटियों पर गर्व है व मैं उन्हें शिक्षित, आत्म्-विश्वासी व आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहला क़दम आपके व आपकी प्रताड़ना के प्रति आवाज उठा कर व आपके घर को छोड़कर कर रही हूँ |

यद्यपि पुरुष प्रधान समाज को ललकारते हुए शाम्भवी ने अपना घर छोड़ा था तथापि परित्यक्ता शब्द तो जीवन पर्यन्त उसके साथ जुड़ गया था | नित्यप्रति यह शब्द उसे सुनने को मिल ही जाता था | घर त्याग कर शाम्भवी ने एक प्राइवेट कम्पनी में नौकरी कर ली और अपनी बेटियों को संस्कारी बनाने के साथ-साथ अच्छी शिक्षा देना भी शुरु किया | जैसे-जैसे- शाम्भवी की कड़ी मेहनत ने उसे ऊँचा उठाया ठीक वैसे ही बेटियों ने कठिन परिश्रम कर अच्छी शिक्षा को प्राप्त किया | आज दो दशक के बाद शाम्भवी के पास ऐच्छिक नौकरी और मकान है, दोनो बेटियाँ डॉक्टर के रूप मे जीवन में सफल बन गयी हैं परंतु एक चीज़ जो " अनैच्छिक " है वह है उसके नाम के साथ जुड़ा शब्द ' परित्यक्ता " कुर्सी पर बैठी शाम्भवी आज यही सोच रही थी |

****

हिन्दू धर्म में देवी देवता

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

देव भाषा संस्कृत के विद्वानों द्वारा 33 कोटि देवी देवता बताये गये हैं परन्तु अलग–अलग प्रचार–प्रसार के कारण इनको 33 करोड़ देवता बताया गया है, सस्कृत भाषा में कोटि के दो अर्थ बताये गये हैः
एक कोटि का अर्थ प्रकार होता है
दूसरे कोटि का अर्थ करोड़ होता है

लेकिन यहां कोटि का अर्थ प्रकार से लिया गया है इस प्रकार हिन्दू धर्म ग्रंथ में 33 कोटि (प्रकार) के देवी– देवताओं का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है आठ वसु, ग्यारह मद 12 आदित्य इन्द्र और प्रजापति के स्थान पर दो अश्विनी कुमारों का वर्णन मिलता है।

जो निम्न हैः–अष्ट (8) वसु :– 1. आप 2. ध्रुव 3. सोम 4. धर 5. अनिल 6. अनल 7. प्रत्युष 8. प्रभाषग्यारह (11) रूद्र 1. मनु 2. मन्यु 3. शिव 4. महत 5. ऋतुध्वज 6. अहिनस 7. उम्रतेरस 8. काल 9. वामदेव 10. भव 11.धृत ध्वज
बारह (12) आदित्य 1. अंशुमान 2. अर्यमन 3. इन्द्र 4. त्वष्टा 5. धातु 6. पर्जन्य 7. पुषा 8. भग 9. मित्र 10. वरूण 11. वैवस्वत 12. विष्णु
दो अश्विनी कुमार 1. नासत्य 2. दस्त्र

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय,
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय,

अर्थः रहीम कहते हैं कि यदि विपत्ति कुछ समय की हो तो वह भी ठीक ही है, क्योंकि विपत्ति में ही सबके विषयकों जाना जा सकता है कि संसार में कौन हमारा हितैषी है और कौन नहीं।

राकेश नेगी
मा0का0 श्रेणी–I

जलवायु परिवर्तनः– पृथ्वी बचाने के लिए 6 वर्ष

विजय सिंह भंडारी
कम्पयूटर टाईपिस्ट

यदि आप यह सोच रहे है कि शीर्ष पंक्ति में यह क्या लिखा है तो मै बता दू कि यह बात एक दम सत्य है तथा पृथ्वी को बचाने के लिए हमारे पास सिर्फ 6 वर्ष ही बचे है। यह संकट पृथ्वी पर बाहर से नही आने वाला है। यह संकट मनुष्य के द्वारा ही उत्पन्न किया गया है तथा वर्तमान में जलवायु परिवर्तन जिस तरह से मनुष्य के जीवन को प्रभावित कर रहा है उसे नकारा नही जा सकता परंतु हम अभी भी इस विषय को गंभीरता से नही ले रहे है जबकि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण दिखने भी लग गये है। औद्योगिक काल से आज तक हमारे गृह का तापमान 1 डिग्री बढ़ चुका है तथा यह निरंतर बढ़ता ही जा रहा है यदि यह 2 डिग्री तक बढ़ गया तो धरती का संतुलन बिगड़ जाऐगा तथा इसे वापिस इसी अवस्था में किसी भी कीमत मे नही लाया जा सकेगा तथा जो तबाही हम अभी देख रहे है वह और भीषण हो जाएगी और इस गृह पर रहना असंभव हो जाऐगा।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारणः–

उपभोगवादः यह सबसे मुख्य कारण है जो हमारी पृथ्वी को खाये जा रहा है। हमे यह लगता है कि हम कोई उपभोग नही करते हम तो सिर्फ सादा जीवन जीते है तथा यह जलवायु परिवर्तन सिर्फ अमीर लोग तथा फैक्ट्री एवं गाड़ी कर रही है, परंतु हमे पता ही नही की किस तरह से तरह से मनुष्य अपना उपभोग अनियंत्रित हो कर कर रहा है। जरूरत ना होने पर भी कुछ भी खरीद लेना, पर्यावरण को बहुत नुकसान दे रहा है मै इसे आपको समझाता हूँ कि ऐसा कैसे हो रहा है :–

मान लीजिए आपने किसी ऑनलाइन ऐप में कपड़ो की सेल का एड देखा तथा उन कपड़ो की आपको आवश्यकता नही थी क्योकि वह कपड़े आपको सस्ते पड़ रहे थे तो आपने ऑर्डर कर दिए परंतु उसे बनाने में जो कपडा उद्योग द्वारा 1 किलो कॉटन के उत्पादन में 10,000 लिटर पानी का इस्तेमाल किया जाता है तथा रंगाई में जो संसाधन इस्तेमाल होते है वो अलग तथा कॉटन को उत्पादन के लिए जिस जगह खेती कि जाती है वहाँ कभी वन को हटाया गया होगा तथा कपडे के उत्पादन में जो उद्योग द्वारा जल को प्रदूषित किया गया है वह अलग से एंव बिजली का ईस्तेमाल किया गया है एक टी शर्ट बनाने में करीब करीब 30 किलोवाट बिजली का ईस्तेमाल किया गया तथा उस बिजली को बनाने में तकरीबन 12 किलो कोयले का ईस्तेमाल किया गया जिसे जिसके खादन से निकाला गया तथा उसे जलाने से 30 किलो कार्बन का उत्सर्जन हुआ यही नही उस टी शर्ट को आपके घर तक पहुँचाने में जैव ईंधन को जलाया गया जिससे कार्बन उत्सर्जन हुआ। यह तथ्य जान कर आप थोड़ा चाकित हो गये हो तथा इस तरह से आपने कभी नही सोचा होगा परंतु हम सारा दोष सिर्फ औरों पर डाल के बच जाते है परंतु सच्चाई यह है कि वह प्रत्येक चीज जिसका उपभोग हम कर रहे है वह प्रकृति पर बोझ है तथा हमे सोच समझ कर ही उपभोग करना चाहिए।

आधुनिक मनुष्य का ऐसा कोई समय नही है जब वह ऊर्जा का इस्तेमाल नही कर रहा है। ज्यादा ऊर्जा तथा संसाधन इस्तेमाल करना विकसित होने का पर्याय बनते जा रहे है जो कि मूर्ख समझ है। आप जैसे कई विख्यात लोगो को देखते हो जो पर्यावरण की सिर्फ बाते करते है परंतु निजि जीवन उसके बिलकुल विपरीत है उनको

देख कर सबके मस्तिष्क में यही विचार आता है कि यह कितना सुखी जीवन जी रहे है। फ्लाईट में आते है इनके पास आलीशान गाड़ियाँ है तथा हमारे पास भी यह सब होना चाहिए, परंतु हम यह तथ्य भूल जाते है यह सब संसाधन पर्यावरण के ऊपर बोझ है तथा इस तरह के विकास से पर्यावरण पर दबाव बढ़ता जा रहा है। जैसे कि एक फ्लाईट द्वारा प्रति व्यक्ति 115 ग्राम प्रति किलोमीटर है यदि कोई फ्लाईट दिल्ली से मुम्बई जाती है जिसकी दूरी तकरीबन 1,137 किमी है तो प्रति व्यक्ति द्वारा प्रतिकिलोमीटरसे गुणा करें तो 0.115 **X** 1137 = 130.755 किलो 2 घंटों में प्रत्येक व्यक्ति के खाते में कार्बन उत्सर्जन आता है तो सोचिए एक फ्लाईट में कितने लोग आते है। पूरे भारत में करीब एक दिन में 4 हजार से साढ़े चार हजार फ्लाईट उड़ रही है तथा पूरे विश्व में करीब करीब 1,00,000 फलाईट उड़ती है तथा प्रति वर्ष विमान ईंडस्ट्री 10 प्रतिशत् की दर से बढ़ रही है और यह डाटा बढ़ता ही जा रहा है। अब आप अपने खाते में आज तक का जितना कार्बन उतर्सजन आपने किया है जोड़ सकते हो। यह कार्बन उत्सर्जन भी बढ़ता ही जा रहा है तो यह सिर्फ एक ही साधन नही रोड और रेल मार्ग भी है तो सोचिये समस्या कितनी गम्भीर है यहाँ यह नही भूलना चाहिए की यह संख्या इसलिए बढ़ रही कि विश्व पर्यटन बढ़ा है, जिसका कारण है बढ़ती अर्थव्यवस्था तथा जैसे–जैसे लोगो के पास पैसा आ रहा है तो वह अनियंत्रित पर्यटन कर रहे है तथा उपभोगवाद को नियंत्रित करना अब बहुत ही आवश्यक हो गया है। हमे अब सोचना होगा की दैनिक जीवन में हमें किस किस चीज की आवश्यकता है। हमारे लिए जो आवश्यक नही है उन वस्तुओं का उपभोग कम करना होगा। उपभोग की यह होड़ अमेरिका जैसे विकसित देश से शुरू हुई और विकास की अंधी दौड़ का दौर शुरू किया है जिससे पृथ्वी को भारी नुकसान हो चुका है उसे त्यागना होगा। विकसित होने का पैमाना सिर्फ भौतिक ही नही। एक पर्यावरण संतुलित विकास का आदर्श मॉडल खड़ा करना होगा। यहाँ यह तथ्य जानना जरूरी है कि अमेरिका का प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन 18 टन है जो कि विश्व में सबसे ज्यादा है। भारत का अभी 1.80 के आस पास है। अमेरिका करीब–करीब 10 गुना है। परंतु इसे एक दम से कम कर देना अभी अस्म्भव लगता है तथा यह शुरूआत सबको ही करनी पड़ेगी। विश्व में जब तक इस बात पे सब एकमत नही हो जाते की कार्बन उत्सर्जन से किसी एक देश को नही पूरे विश्व को ही नुकसान है तब तक कोई भी देश इस पर ध्यान नही देगा तथा कोई भी देश अभी अपना कार्बन उत्सर्जन कम करने को तैयार नही है। देश के स्तर पर यह वार्ता काई बार विफल हो चुकी है परंतु यदि सभी व्यक्ति जागरूक हो जाए तथा व्यक्तिगत स्तर पर दैनिक जीवन पर कार्बन उर्त्सजन कम कर दे तो उसका असर गहरा होगा तथा शीघ्र ही इसके परिणाम पर्यावरण पर सकारात्मक होंगे।

जनसंख्याः– जनसंख्या वृद्धि सबसे बड़े कारणों में से एक है क्योकि यह कार्बन उत्सर्जन मनुष्य द्वारा ही जनित है तथा जैसे जैसे जनसंख्या बढ़ती जाऐगी यह समस्या और बढ़ती जाऐगी। जनसंख्या नियंत्रण अति आवश्यक है क्योकि एक आंकड़े के हिसाब से जितना कार्बन 40 क्विंटल औसतन एक मनुष्य सालभर में करता है। तथा साल भर में उतना ही कार्बन एक पेड़ द्वारा नही सोखा जाता है। उस कार्बन को सोखने में करीब 40 साल लग जाते है तो जो लोग यह बोल रहे है कि पेड़ लगाने से यह समस्या हल हो जाऐगी तो ऐसा अब नही होने वाला। अब स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि हमारे पास सिर्फ 6 वर्ष ही बचे है। यह पेड़ लगाना एक बहुत छोटा सा उपाय है बड़ी बीमारी का क्योकि जब किसी को कैंसर हो जाए तो सरदर्द की दवाई से उसका उपचार नही हो सकता इसी प्रकार से यह बीमारी फैल चुकी है जिसे अब बड़े उपचार से ही हल करना पड़ेगा। पर्यावरण पर कुछ प्रत्यक्ष प्रभाव के उदाहरण है जैसे की रूस मे परमाफ्रास्ट पिघलने लगे है जो की इतिहास में पहले कभी नही देखा गया है परमाफ्रास्ट क्या है संक्षेप मे यह एक ऐसी जमीन होती है जो लगातार 0 डिग्री से नीचे

के तापमान में सालभर रहती है तो वहाँ की मिट्टी की नीचे कि सतह जम जाती है। रूस एक ऐसा देश है जिसका साईबेरिया का प्रांत जमा हुआ है तथा साल भर का औसत तापमान –20 डिग्री है। वहाँ परमाफ्रास्ट काफी मात्रा में है जो पिघल रहा है। जिससे बड़े–बडे गड्ढे हो गये है। तथा तापमान भी तेजी से बढ़ रहा है क्येकि जहाँ से बर्फ मिट्टी को छोड़ देती है वहाँ कि मिट्टी धूप को सोखने लगती है जिससे की तापमान और ज्यादा बढ़ जाता है तथा पूरी बर्फ गलने पर यह प्रक्रिया तेजी से बढ़ती जा रही है तथा गलेश्यिर भी तेजी से पिघल रहे है जो कि नदियों के उदगम् का कारण है।

उपायः– अब तक हमने कारणों पर बात करी परंतु अब मै आपकों कुछ समाधान बताता हूँ आइए जानते हैः–

सोलर उर्जा तथा नवीकरणीय ऊर्जा का इस्तोमाल वाहनों तथा दैनिक जीवन में करना जिससे काफी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन कम हो जाएगा। जैसे ई–कार, बाईक आदि। दैनिक जीवन में हमें यह देखना पडेगा कि क्या–क्या आवश्यक वस्तु है जो मेरे उपयोग में है तथा जिससे मेरा काम चल जाऐगा। विमान में सफर को कम तथा बहुत आवश्यक होने पर ही करना होगा यह कदम किसी देश द्वारा नही अपितु उस प्रत्येक व्यक्ति को करने होंगे जो इस पृथ्वी पर है तथा इसके संसाधनों का उपभोग कर रहा है अन्यथा इस त्रासदी को रोकने से अब कोई नही रोक सकता। अभी तो हम सिर्फ बाढ़ और सूखा ही देख रहे है अभी और भी खतरनाक स्थिति हमारे सामने आने लगेगी। हमें संकल्प लेना होगा की अब से हम सभी को इस धरा को बचाना है तथा इस धरा के सिवा हमारे पास कोई दूसरा ग्रह अभी नही है। इसलिए बहाने छोड़िये और अपने स्तर पर कार्बन उत्सर्जन कम करिए।

****

सरकारी तंत्र को कैसे मजबूत बनाया जाए

जसबीर सिंह
एम०टी०एस

किसी भी सरकार का काम का क्षेत्र बड़े पैमाने पर होते हैं। जो कि देश के जनता की जिन्दगी को सभी दिशाएं छू जाते है। देश की तरक्की और विकास के लिए सरकारी तंत्र के भीतर का कार्यक्षमता बल सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसलिए सरकारी दफतर में अधिकारी एवं कर्मचारी के बीच में तालमेल होना जरूरी है जो देश के अधिकतम हित के लिए हैं। सरकारी तंत्र से जुड़े हुए सारे लोग के अन्दर देशप्रेम, लगन एवं मेहनत करने की इच्छाएं होना चाहिए। एक अधिकारी एवं कर्मचारी के अन्दर खुला दिमाग, ध्यान देकर दूसरों की बात सुनने का कौशल, सहानुभूति सहनशीलता, आत्मजागरूकता, धैर्य और अपना तनाव नियंत्रण करने की क्षमता, नेतृत्व करने का कौशल, मोलतोल की प्रवीणता, शिष्टाचार जैसे गुण होना चाहिए। दूसरी ओर ऐसे वातावरण बनाना चाहिए कि अधिकारी एवं कर्मचारी रोज दफ्तर आने के लिए उत्सुक हों। सरकारी दफ्तर का लक्ष्य के बारे में स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए नौकरी का ज्ञान और कार्यक्षमता को बढ़ावा देते हुए अधिकारी एंव कर्मचारी को काम के प्रति आत्मिक आसक्ति बनाना चाहिए साथ–ही–साथ कर्मचारी मान्यता कार्यक्रम का रचनात्मक उपयोग करना, कामकाज की दुनिया में अगली पंक्ति पर खड़ा होने वाला कर्मचारी बनाना, कर्मस्थल में पारस्परिक सम्बंध बनाए रखना, कम प्रशिक्षित या अकुशल लोगों को ऊपर उठाना औपचारिक एंव अनौपचारिक पुरस्कार के साथ दर्शन आधारित पुरस्कार की व्यवस्था करना आवश्यक है। यदि अपनी डयूटी को सैल्यूट करोगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्यूट करने की जरूरत नही पड़ेगी लेकिन यदि आप अपनी डयूटी को पॉल्यूट करेंगे तो आपको हर किसी को सैल्यूट करना पड़ेगा।

भारत का गगनयान मिशन: अग्रणी मानव अंतरिक्ष उड़ान

सतेन्द्र सिंह रावत
मा0का0 श्रेणी–I

परिचय

भारत का गगनयान मिशन अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में देश की महत्वाकांक्षा और प्रगति का एक प्रमाण है। अगस्त 2018 में घोषित इस मिशन का उद्देश्य भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजना है, जो भारत के अंतरिक्ष प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस निबंध में, हम गगनयान मिशन के प्रमुख पहलुओं का पता लगाएंगे, जिसमें इसके उद्देश्य, महत्व, चुनौतियाँ और भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर संभावित प्रभाव शामिल हैं।

गगनयान मिशन के उद्देश्य:

गगनयान मिशन का प्राथमिक उद्देश्य मनुष्यों को सुरक्षित रूप से अंतरिक्ष में भेजने की भारत की क्षमता का प्रदर्शन करना है। इस मिशन का लक्ष्य कई विशिष्ट लक्ष्य प्राप्त करना है:

1. **मानव अंतरिक्ष उड़ान क्षमता :** भारत मानव अंतरिक्ष उड़ान में अपनी दक्षता स्थापित करना चाहता है और उन देशों के एक विशिष्ट समूह में शामिल होना चाहता है जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की है।

2. **क्रू अंतरिक्ष अन्वेषण :** गगनयान भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को चिकित्सा, जीव विज्ञान और सामग्री विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करते हुए माइक्रोग्रैविटी में वैज्ञानिक प्रयोग करने में सक्षम करेगा।

3. तकनीकी प्रगति: मिशन जीवन समर्थन प्रणाली, अंतरिक्ष यान डिजाइन और अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण सहित अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देगा।

4. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग :** भारत अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम को और बढ़ाने के लिए ज्ञान और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने के लिए अन्य अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ सहयोग करने का इरादा रखता है।

गगनयान मिशन का महत्व :

गगनयान मिशन कई मोर्चों पर अत्यधिक महत्व रखता है:

1. **तकनीकी उन्नति :** भारत उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षमताएं हासिल करेगा, जिससे वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में इसके विकास को बढ़ावा मिलेगा।

2. **वैज्ञानिक अनुसंधान :** जहाज पर अंतरिक्ष यात्री ऐसे प्रयोग कर सकते हैं जो केवल अंतरिक्ष के अद्वितीय सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण वातावरण में ही संभव हैं, जिससे विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में सफलता मिलेगी।

3. **राष्ट्रीय गौरव :** मानव अंतरिक्ष उड़ान हासिल करना राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देगा और वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के रूप में काम करेगा।

4. **रणनीतिक महत्व :** अंतरिक्ष अन्वेषण राष्ट्रीय सुरक्षा और तकनीकी नवाचार में योगदान देता है, जिससे वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति मजबूत होती है।

चुनौतियाँ और समाधान:

गगनयान मिशन के सामने कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन भारत ने उनसे निपटने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं:

1. **अंतरिक्ष यात्री चयन और प्रशिक्षण :** अंतरिक्ष की कठिनाइयों का सामना करने के लिए अंतरिक्ष यात्रियों का चयन और प्रशिक्षण एक जटिल प्रक्रिया है। भारत ने अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण में अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ सहयोग किया है।

2. अंतरिक्ष यान विकास : एक सुरक्षित और विश्वसनीय अंतरिक्ष यान विकसित करना महत्वपूर्ण है। भारत की अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो का अंतरिक्ष यान विकास में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड है और सफलता सुनिश्चित करने के लिए उसने पिछले मिशनों से सबक लिया है।

3. जीवन समर्थन प्रणालियाँ : यात्रा के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उन्नत जीवन समर्थन प्रणालियों की आवश्यकता होती है। इसरो इन प्रणालियों पर काम कर रहा है, और अन्य एजेंसियों के साथ सहयोग मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

4. फंडिंग और बजट की कमी : मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन महंगे हैं। भारत ने पर्याप्त धनराशि आवंटित की है और लागत को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी चाहता है।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर संभावित प्रभाव:

गगनयान मिशन के सफल समापन का भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा:

1. बढ़ी हुई वैश्विक प्रतिष्ठा : भारत मानव अंतरिक्ष उड़ान में सक्षम देश के रूप में अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करेगा, जिससे वैश्विक अंतरिक्ष प्रयासों में अपनी स्थिति मजबूत होगी।

2. विस्तारित वैज्ञानिक अनुसंधान : मिशन के दौरान किए गए डेटा और प्रयोग वैज्ञानिक ज्ञान और नवाचारों में योगदान देंगे जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों को लाभ पहुंचा सकते हैं।

3. आर्थिक अवसर : अंतरिक्ष अभियानों में सफलता से उपग्रह प्रक्षेपण, अंतरिक्ष पर्यटन और अन्य अंतरिक्ष-संबंधित उद्योगों में व्यावसायिक अवसर पैदा हो सकते हैं।

4. भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा : यह मिशन युवा भारतीयों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा, जिससे भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक कुशल कार्यबल तैयार होगा।

निष्कर्ष:

भारत का गगनयान मिशन अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में देश के दृढ़ संकल्प और महत्वाकांक्षा का एक प्रमाण है। यह वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास और राष्ट्रीय गौरव का वादा करते हुए भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक बड़ी छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। सही रणनीतियों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ, भारत एक सफल मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन हासिल करने के लिए तैयार है, जो उसकी अंतरिक्ष यात्रा में एक ऐतिहासिक क्षण है।

****

नन्ही जल की बूंदें

नन्ही जल की बूंदें
प्यारी–प्यारी जल की बूंदें
बरसातों में खेलें–कूदें
ऊपर से गिरकर मिट जाए
सभी बच्चों का दिल बहलाए
सारे मिल बूंदे बन जाए
तब मानव की प्यास बुझाएं
पानी को हम चलो बचाएं
बिना वजह इसे न बहाएं

अदिती
पुत्री श्री वेद प्रकाश

आन्या सिंह
पुत्री श्रीमती सीमा सिंह

जोशीमठ

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

जोशीमठ, उत्तराखंड के चमोली जिले मे स्थित भगवान बद्रीनाथ की शीतकालीन गद्दी है। इसका कारण है कि बद्रीनाथ के कपाट शीतकाल मे बंद हो जाते है। भगवान बद्रीविशाल की मूर्ति को जोशीमठ के नर सिंह मंदिर मे रखा जाता है और छः माह भगवान बद्रीनाथ की पूजा जोशीमठ में कि जाती है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार 8 वीं सदी में आदि शंकराचार्य ने जोशीमठ में तपस्या की थी। शंकराचार्य ने भारत में बने चार मठों में सबसे पहले इसी मठ की स्थापना की थी। इसके बाद इस स्थान को ज्योर्तिमठ कहा जाने लगा। धार्मिक और पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने प्रहलाद की भक्ति से नृसिंह अवतार लिया और हिरण्य–कश्यप का वध कर दिया। भगवान नृसिंह का गुस्सा शान्त करने के लिये प्रलाहद ने माता लक्ष्मी के कहने पर फिर से जप–तप किया प्रहलाद के जप–तप के प्रभाव से भगवान नृसिंह का गुस्सा शान्त हुआ और इसके बाद वे शांत रूप में जोशीमठ में विराजमान हुए।

भगवान नृसिंह की स्फटिक मूर्ति की एक भुजा साल दर साल पतली होती जा रही है, इसको लेकर कई मान्यताएं है।

1. स्कंद पुराण के केदारखंड के सनत कुमार संहिता में लिखा है कि भगवान नृसिंह के मूर्ति के हाथ की ये भुजा जिस दिन टूटकर गिर जाएगी, तब नर पर्वत और नारायण पर्वत आपस में मिल जाएंगे और बद्रीनाथ जाने का रास्ता भी बंद हो जाऐगा। इसके बाद भगवान बद्री विशाल भविष्य बद्री में पूजे जाएंगे यह स्थान बद्रीनाथ से 19 किलोमीटर दूर तपोवन में है।
2. पांडवो ने जब राजपाट का त्याग कर स्वर्ग जाने का निश्चय किया तो उन्होने जोशीमठ से ही पहाड़ी का रास्ता चुना, पांडवों ने माणा गांव पार कर एक शिखर आता है जिसे स्वर्गरोहिणी कहा जाता है, यही से पांडवों ने युधिष्ठिर का साथ छोड़ना शुरू कर दिया और आखिर में एक कुत्ता ही युधिष्ठिर के साथ स्वर्ग तक गया इसी कारण जोशीमठ को स्वर्ग का द्वार कहा जाता है।

जोशीमठ को स्वर्ग का द्वार कहे जाने का एक कारण यह भी है जोशीमठ को पार करने के बाद फूलों की घाटी पड़ती है, और औली की शुरूआत हो जाती जिसकी सुन्दरता स्वर्ग के समान है।
एक आचार्य के द्वारा श्रीमदभागवत् कथा सुनाते हुए यह प्रवचन दिया गया कि जोशीमठ के पास पाडुकेश्वर (कुण्ड) का जल लाकर लकवा पीड़ित व्यक्ति को थोड़ा–थोड़ा पिलाने पर कुछ ही सप्ताह मे लकवा पीड़ित व्यक्ति ठीक हो सकता है।

भारत की उभरती अर्थव्यवस्थाः विकास और अवसरों की यात्रा

सतेन्द्र सिंह रावत
मा0का0 श्रेणी–I

जैसे–जैसे हम 21वीं सदी के तीसरे दशक में कदम रख रहे हैं, भारत की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि जारी है और यह खुद को दुनिया की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में से एक के रूप में स्थापित कर रही है। पिछले कुछ दशकों में, भारत में महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार और परिवर्तनकारी परिवर्तन हुए हैं, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति हुई है। यह निबंध भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में योगदान देने वाले कारकों, इसकी उपलब्धियों, चुनौतियों और आगे आने वाले अवसरों पर प्रकाश डालता है। इस उभरती अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप इसने आमजन के लिए व्यापार के लिए दरवाजे खोल दिए। इससे भारत खुद को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने और विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने में सक्षम हुआ। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का प्रवाह पर्याप्त रहा है, विशेषकर दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में।

भारत का सेवा क्षेत्र, विशेष रूप से आईटी और आईटी–सक्षम सेवाएं, एक बड़ी सफलता की कहानी रही है। देश के कुशल कार्य बल और अंग्रेजी में दक्षता ने इसे आउटसोर्सिंग सेवाओं का वैश्विक केंद्र बना दिया है। भारतीय आईटी कंपनियों ने दुनिया भर के व्यवसायों को लागत प्रभावी और अभिनव समाधान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत की आर्थिक वृद्धि के प्रमुख कारकों में से एक इसका जनसांख्यिकीय लाभांश रहा है। युवा और जीवंत आबादी के साथ, देश में विशाल कार्यबल है, जो उद्योगों और व्यवसायों के फलने–फूलने के लिए अनुकूल माहौल तैयार कर रहा है। कामकाजी उम्र की बढ़ती आबादी ने विनिर्माण, आईटी और सेवाओं जैसे श्रम–गहन क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था को बाहरी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है, जैसे वैश्विक कमोडिटी कीमतों में उतार–चढ़ाव, व्यापार तनाव और भू–राजनीतिक अनिश्चितताएं। ये कारक भारत के निर्यात–उन्मुख उद्योगों और समय आर्थिक स्थिरता पर प्रभाव डाल सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट अतिरिक्त चुनौतियों हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। जैसे–जैसे भारत का औद्योगीकरण हो रहा है, सतत विकास प्रथाएं और पर्यावरण संरक्षण अनिवार्य हो गया है।

हालांकि, इन चुनौतियों के बीच, भारत की अर्थव्यवस्था विकास और निवेश के लिए अपार अवसर प्रदान करती है। देश में एक विशाल उपभोक्ता आधार है, जो व्यवसायों के लिए आकर्षक संभावनाएं प्रस्तुत करता है। बढ़ते मध्यम वर्ग और बढ़ती प्रयोज्य आय के कारण उपभोक्ता खर्च में वृद्धि हुई है, जिससे विभिन्न उद्योगों के लिए अनुकूल बाजार तैयार हुआ है।

इसके अलावा, भारत के विनिर्माण क्षेत्र में वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की क्षमता है। आत्मनिर्भरता और व्यापार करने में आसानी के लिए सरकार के जोर के साथ, विदेशी कंपनियां चीन के व्यवहार्य विकल्प के रूप में भारत पर नजर रख रही हैं।

डिजिटल क्रांति ने भी जबरदस्त संभावनाओं को खोल दिया है। भारत में डिजिटल अपनाने में वृद्धि देखी गई है, बड़ी संख्या में लोग स्मार्टफोन के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। ई–कॉमर्स, फिनटेक और डिजिटल भुगतान में तेजी से वृद्धि देखी गई है, जिससे निवेशकों के लिए आकर्षक अवसर पैदा हुए हैं।

यदि कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाया जाए और सही तकनीक से सुसज्जित किया जाए, तो यह ग्रामीण समृद्धि को बढ़ा सकता है और खाद्य सुरक्षा में योगदान दे सकता है। अनुसंधान और विकास, सिंचाई और मूल्य संवर्धन में निवेश कृषि परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

भारत के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र ने महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, जो ऊर्जा का एक स्थायी और स्वच्छ स्त्रोत प्रदान करता है। प्रचुर सौर और पवन संसाधनों के साथ देश का लक्ष्य अपने नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों का प्राप्त करना, निवेशकों के लिए अवसर प्रदान करना और एक हरित भविष्य को बढ़ावा देना है।

बुनियादी ढांचे के विकास पर सरकार का ध्यान निजी निवेश के लिए रास्ते तैयार कर रहा है। बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा।

भारत की अर्थव्यवस्था का उत्थान न केवल घरेलू विकास तक सीमित है बल्कि इसका वैश्विक प्रभाव भी फैला हुआ है। भारत अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है, जो विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी और व्यापार समझौतों में संलग्न है। इसकी सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक विविधता और ज्ञान अर्थव्यवस्था इसकी वैश्विक अपील को बढ़ाती है।

निष्कर्षतः भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था साहसिक सुधारों, जनसांख्यिकीय लाभ, वैश्वीकरण और एक सक्रिय सरकार का परिणाम है। हालांकि चुनौतियां बनी हुई हैं, देश का विकासपथ निवेशकों और व्यवसायों के लिए अपार अवसर प्रस्तुत करता है। मौजूदा चुनौतियों का समाधान करके और अपनी ताकत का लाभ उठाकर, भारत में वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख शक्ति बनने की क्षमता है, जो अपने नागरिकों और समग्र रूप से दुनिया की भलाई में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

****

गोल गोल पानी

गोल गोल पानी
मम्मी मेरी रानी,
पापा मेरे राजा
फल खाए ताजा
सोने की चिडिया
चाँदी का दरवाजा
उसमे कौन आएगा
मेरा भैया राजा

अदिती
पुत्री श्री वेद प्रकाश

मुन्नार हिल स्टेशन

अरूण कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

मुन्नार हिल स्टेशन केरल राज्य के इडुक्की जिले में स्थित है. इस खूबसूरत शहर का एक समृद्ध औपनिवेशिक इतिहास है क्योंकि यह भारत में ब्रिटिश अभिजात वर्ग के लिए एक रिसॉर्ट हुआ करता था। भारत के खूबसूरत पश्चिमी घाटों पर स्थित इस शहर में प्राकृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के मामले में बहुत कुछ है। कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, लगभग 110 किमी दूर स्थित, मुन्नार का निकटतम हवाई अड्डा है। **कोचीन से मुन्नार दक्षिण भारत के सबसे खूबसूरत मार्गों में से एक है। आप अपने चारों ओर हरी-भरी हरियाली और पहाड़ियाँ देखते हैं और मौसम इसे और भी आरामदायक बना देता है।**

कोचीन से मुन्नार की दूरी 125.8 किलोमीटर है और स्व-चालित कार से कोच्चि से मुन्नार तक पहुंचने में 3 घंटे 45 मिनट का समय लगेगा। मुन्नार से कोचीन मार्ग दक्षिण में सबसे अच्छे और सबसे अधिक बार आने वाले मार्गों में से एक है। कोच्चि से मुन्नार जाने का सबसे अच्छा मार्ग कोच्चि - मुवत्तुपुझा - कोठामंगलम - नेरियामंगलम - आदिमाली - मुन्नार से होकर जाता है।मुन्नार के पास ही स्थित है चाय का संग्रहालय जोकि टाटा टी संग्रहालय के नाम से मशहूर है यहां आपको कई दुर्लभ कलाकृतियां, चित्र और मशीनें देखने को मिलेंगी जो चाय के बागानों की उत्पत्ति और विकास के बारे में बताती हैं। कई प्रकार की चाय पत्तियां भी यहां मौजूद हैं जिन्हें चाहे तो खरीद भी सकते हैं।

वैसे तो मुन्नार के आसपास कई झरने हैं लेकिन अधिकतर पर्यटक पल्लिवासल और चिन्नाकनाल को देखना पसंद करते हैं। पल्लिवासल पावर हाऊस वाटरफाल्स के नाम से भी प्रसिद्ध है। मुन्नार से 15 किमी की दूरी पर स्थित है इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान जोकि मशहूर पर्यटक स्थल है। ये उद्यान लुप्तप्राय जीव नीलगिरी टार के संरक्षण के लिए जाना जाता है। इसके अलावा इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान कई तितलियों, जानवरों और पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियों का बसेरा है। यहां आकर आप ट्रैकिंग करने का आनंद भी उठा सकते हैं। नीलकुंरजी फूल इसी उद्यान में पाया जाता है जिसके खिलने से लगता है जैसे पहाड़ियां नीली चादर से ढंक गई हों साथ ही यहां घुमावदार पर्वतों पर पड़ने वाली धुंध की चादर बहुत ही मनोरम दृश्य प्रस्तुत करती है। अनामुडी शिखर भी इसी उद्यान में स्थित है, ये शिखर दक्षिण भारत का सबसे ऊंचा शिखर है जिसकी ऊंचाई 2700 मीटर से भी ज्यादा है।

- घूमने के लिए बेहतरीन मुन्नार हिल स्टेशन जगहें

- टाटा टी संग्रहालय: टाटा टी म्यूजियम मुन्नार के नल्लथननी स्टेट में स्थित एक पर्यटक स्थल है। मुन्नार की यात्रा पर आने वाले पर्यटक इस स्थान पर घूमने जरूर आते हैं जोकि कई प्रकार की चाय की किस्मों के लिए जाना जाता हैं। मुन्नार में स्थित टाटा टी म्यूजियम टाटा द्वारा शुरू किया गया था। मुन्नार को चाय के बागानों का केंद्र माना जाता है।
- एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान: कुंडाला डेम एंड लेक बहुत ही आकर्षक जगह है यह समुद्र तल से लगभग 1700 मीटर की उंचाई पर स्थित है। यह स्थान मुन्नार से लगभग 27 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। कुंडाला बांध एशिया महाद्वीप का पहला आर्क बाँध

है। पर्यटक इस झील तथा बांध को देखने के लिए दूर–दूर से आते है। यहां कश्मीरी–शिकारा की नाव चलने का अद्भुत आनंद भी टूरिस्ट लेते हैं।
*मुन्नार में ट्रेकिंग के लिए लॉक हार्ट गैप: मुन्नार की यात्रा में लॉक हार्ट गैप ट्रेकिंग के लिए प्रसिद्ध जगह है। यह स्थान बंद दिल की आकृति की तरह दिखाई देता है और यहां से आप मुन्नार के चाय के बागान और यहां की रमणीय पहाड़ियों का दृश्य देख सकते हैं।

नीलकुरिंजी : मुन्नार यात्रा में देखने लायक स्थान नीलकुरिंजी बहुत ही सुन्दर स्थान है। यह स्थान अपने नीले फूलो के कारण जग प्रसिद्ध है। नीलकुरिंजी में 40 प्रकार के पुष्पों की जातियां है जिनमे से ज्यादातर नीले रंग के पुष्प है। नीले रंगों के पुष्पों के कारण नीलकुरिंजी के पहाड़ भी नीले प्रतीत होते हैं जोकि फोटोग्राफी के शौकीन पर्यटकों के दिल को छु जाते हैं। प्रकृति प्रेमियों के लिए तो मानो यह स्थान किसी जन्नत से कम नही हैं।

रोज गार्डन:मुन्नार की यात्रा में घूमने वाली खूबसूरत जगह रोज गार्डन मुन्नार शहर से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर मट्टुपेट्टी में स्थित आकर्षित पर्यटन स्थल हैं। सुन्दर गुलाब के फूलों के कारण प्रसिद्ध रोज गार्डन के आसपास कई दर्शनीय स्थान हैं।

मुन्नार का आकर्षण स्थल इको पॉइंट : मुन्नार की यात्रा पर यदि आप खूबसूरत और शांत वातावरण की तलाश कर रहे हैं तो इको पॉइंट आपके लिए सबसे खास साबित हो सकता हैं। शांत वातावरण और ठंडी हवा के साथ इस टूरिस्ट प्लेस पर पिकनिक मानाने का अपना ही एक अलग अनुभव हैं। यह स्थान एक सुन्दर झील के किनारे पर स्थित है। यहाँ आप झरने के भीतर भी अपनी आवाज क्लियर रूप से सुन सकते है। इको पॉइंट के आसपास चाय, कॉफ़ी तथा मसालों के बागान भी है। इन स्थानों पर घूमने के साथ-साथ पर्यटक ट्रेकिंग का आनंद भी ले सकते हैं।

अनामुडी पीक : अनामुड़ी पीक दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटियों में से एक है। अनामुड़ी चोटी बिलकुल हाथी की आकृति की प्रतीत होती है और यही खास वजह है जिससे इसका नाम अनामुड़ी पड़ा हैं। क्योकि अनामुड़ी का मतलब ही हाथी का माथा होता है। सूर्य उदय के समय यह पर्यटन स्थान शानदार दिखाई देता हैं इसकी सुन्दरता शब्दों में बयान नही की जा सकती हैं। एक बार आप भी इस स्थान पर घूमने जरूर जाएं।

लक्कम वाटरफॉललक्कम वाटरफॉल वागवुरई स्टेट के पास स्थित एक सुन्दर जलप्रपात है। वागवुरई घाटी लक्कम वाटर फाल की सुन्दरता को बहुत ज्यादा बढा देती है। यह स्थान फोटोग्राफी के शौकीन पर्यटकों के लिए बहुत ही आकर्षक और अलौकिक सौन्दर्य से भरा हुआ टूरिस्ट प्लेस है।

कुंडाला डेम एंड लेक:
कुंडाला डेम एंड लेक बहुत ही आकर्षक जगह है यह समुद्र तल से लगभग 1700 मीटर की उंचाई पर स्थित है। यह स्थान मुन्नार से लगभग 27 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। कुंडाला बांध एशिया महाद्वीप का पहला आर्क बाँध है। पर्यटक इस झील तथा बांध को देखने के लिए दूर–दूर से आते है। यहां कश्मीरी–शिकारा की नाव चलने का अद्भुत आनंद भी टूरिस्ट लेते हैं।

मुन्नार का फेमस पर्यटन स्थल पुनर्जन्नी ट्रेडिशनल विलेज: पुनर्जनी केरल के मुन्नार शहर से 18 किलोमीटर की दूरी पर पल्लीवासल में स्थित है। यह सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जाना जाता है, प्रतिदिन यहां एक घंटे के लिए कला से सम्बंधित शो आयोजित किया जाता हैं। आप मुन्नार के साथ–साथ इस सांस्कृतिक स्थल के दर्शन करके भी आनंद में खो जायेंगे।

पॉवर हाउस फाल्सपॉवर हाउस फाल्स बहुत ही प्रसिद्ध फॉल है ऐसा माना जाता है कि माता सीता ने इस झरने में स्नान किया था। यह झरना पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही सुहावना है। यह पहाड़ी रिसोर्ट में स्थित है जो की केरल के मुन्नार का मुख्य पर्यटन स्थल है।

मुन्नार में हाथी की सवारी के लिए एलिफेंट अराइवल स्पॉटमुन्नार की यात्रा पर घूमने के लिए मुन्नार से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एलिफेंट अराईवल स्पॉट हाथी की सवारी के लिए फेमस है। जंगल घूमने के लिए आप यहां हाथी की सवारी कर सकते है जोकि एक अलग प्रकार के आनंद की अनुभूति है।

मुन्नार में ट्रेकिंग के लिए लॉक हार्ट गैपमुन्नार की यात्रा में लॉक हार्ट गैप ट्रेकिंग के लिए प्रसिद्ध जगह है। यह स्थान बंद दिल की आकृति की तरह दिखाई देता है और यहां से आप मुन्नार के चाय के बागान और यहां की रमणीय पहाड़ियों का दृश्य देख सकते हैं।

इंडो स्विस डेरी फार्म इंडो स्विस डेरी फार्म मवेशी विकास और अनुसंधान केंद्र के लिए फेमस है और विभिन्न प्रकार की मवेशियों

का समावेश इस स्थान पर है। इस मवेशी ग्रह के ने अपने में 400 से अधिक मवेशी ग्रहो को नियंत्रित किए हुए हैं।

ब्लोसम पार्कब्लोसम पार्क वाटर साइकिलिंग, स्केटिंग तथा वोटिंग के लिए फेमस है। इसमें ट्री हाउस और रोपवे के छोटे – छोटे स्थान बहुत ही रोमांचक और आकर्षक है। यह भी मुन्नार का बहुत ही शानदार पर्यटक स्थल है।

चिथिरापुरममुन्नार पर्यटन स्थल में शामिल चिथिरापुरम स्थान छोटा सा गांव है जोकि अपने आप में भारत की बहुत प्राचीन संस्कृति का समावेश किए हुए है। यहां स्थित खेल के मैदान, पुराने बंगले और चाय के बगान आकर्षण का केंद्र बिंदु हैं। पर्यटक दूर-दूर से इस गांव में घूमने आते है और यहा की प्राचीन संस्कृति से अवगत होते है।

फ्लोरीकल्चर सेंटर मुन्नार यात्रा में यहां का फ्लोरीकल्चर सेंटर घूमने जरूर जाए जोकि अपने हर्वल पौधों के लिए बहुत अधिक फेमस है। यह मुन्नार की प्रमुख आकर्षित जगहों में से एक मानी जाती है।

ऐतिहासिक जगह क्रिस्ट चर्चद क्रिस्ट चर्च मुन्नार की यात्रा में एक दर्शनीय स्थल हैं, जोकि लगभग 110 साल पहले ब्रिटिश के टी प्लान्टर द्वारा बनाया गया था। यहां का दौरा करने वाले पर्यटक इस आकर्षक जगह को देखने के लिए आते है। यहा पर कई सारी अद्भुत पेंटिंग्स भी है जो पर्यटकों को बहुत आकर्षित लगती है।

जलप्रपात वलरा फाल्स मुन्नार पर्यटन से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर देवियानार नदी के तट पर स्थित वलरा फाल्स बहुत ही आकर्षक और आश्चर्यजनक सौन्दर्य से परिपूर्ण स्थान है यह पर्यटकों को सहज ही अपनी और आकर्षित करता है ।

मुन्नार के दर्शनीय स्थल कलारी क्षेत्र –

कलारी क्षेत्र को मार्शल आर्ट की जननी माना जाता है यही से कुंगफू तथा कराटे का विकास हुआ था। आज भी मुन्नार में कलारी क्षेत्र में कला शालाओं और प्रदर्शन केन्द्रों का आयोजन किया जाता है। यह भी मन्नार के प्रमुख टूरिस्ट स्थानों में से एक हैं।
ट्री हाउसट्री हाउस मुन्नार की एक ऐसी जगह है जहां छुट्टियों में लोग रहना बहुत अधिक पसंद करते है। यहां के हरे-भरे चाय तथा मसालों के बागानों के बीच रहने का विचार ही पर्यटकों के मन को ख़ुशी से भर देता है। इस जगह को मुन्नार की सबसे अनोखी जगहों में से एक माना जाता है।

राजमलाई वाइल्डलाइफ सेंचुरीराज मलाई वाइल्डलाइफ सेंचुरी पहले सामान्य पार्क था परन्तु केरल सरकार ने 1975 में इसे वाइल्डलाइफ सेंचुरी के रूप में तब्दील कर दिया हैं। 1978 में इसे नेशनल पार्क घोषित कर दिया गया। यह मुन्नार का बहुत ही सुन्दर तथा आकर्षक पार्क है। इस पार्क को तीन अलग–अलग भागों में बांटा गया है। पर्यटक केवल टूरिस्ट पार्ट में ही प्रवेश कर सकते है।

राज मलाई वाइल्डलाइफ सेंचुरी पहले सामान्य पार्क था परन्तु केरल सरकार ने 1975 में इसे वाइल्डलाइफ सेंचुरी के रूप में तब्दील कर दिया हैं। 1978 में इसे नेशनल पार्क घोषित कर दिया गया। यह मुन्नार का बहुत ही सुन्दर तथा आकर्षक पार्क है। इस पार्क को तीन अलग–अलग भागों में बांटा गया है। पर्यटक केवल टूरिस्ट पार्ट में ही प्रवेश कर सकते है।
मुन्नार हिल स्टेशन की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय –

मुन्नार हिल स्टेशन की यात्रा पर जाने से पहले आपको यह जान लेना अतिआवश्यक हैं कि मुन्नार जाने के लिए सबसे अच्छा समय कौन सा रहेगा। तो आइए हम आपको बता दें कि मुन्नार की यात्रा के सबसे अच्छा समय जून से लेकर सितम्बर का माना जाता हैं। भले ही आप मानसून के मौसम से बचना चाहते हैं लेकिन मुन्नार यात्रा का लुत्फ उठाने के लिए यह बेस्ट टाइम हैं।

****

सुविचार

ममता तोमर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

कोई कितना भी कड़वा बोले अपने आप को शांत रखें क्योकि धूप कितनी भी तेज क्यों न हो, समुद्र को नही सुखा सकती।

एक बेहतनीन इंसान अपनी जुबान और कर्मो से ही पहचाना जाता है, वरना अच्छी बाते तो दीवारों पर भी लिखी होती है।

किसी ने पूछा इस दुनिया में आपका अपना कौन है मैने हंसकर कहा 'समय' अगर वो सही, तो सभी अपने, वरना कोई नही।

समय और शब्द दोनो का उपयोग लापरवाही से न करें क्योकि ये दोनो न दुबारा आते है, न मौका देते है।

लोगों ने साथ नहीं दिया तो अफसोस मत करना, सपने आपके हैं तो कोशिश भी आपकी होनी चाहिए।

अपनी उम्र और पैसों पर कभी घमंड मत करना क्योकि जो चीजे गिनी जा सकती है वो यकीनन खत्म हो जाती है।

आप किसी की बातों को सह जाते है तो यह आपकी कमजोरी नही, यह आपके धैर्य और आपकी मानसिक मजबूती को दिखाता है, क्योकि इसे सहने की क्षमता सभी में नही होती।

शिक्षक और सड़क दोनो एक जैसे होते है, खुद जहाँ है वही पर रहते है लेकिन दूसरों को उनकी मंजिल तक पहुँचा देते है।

आदित्य एल1 का महत्व

सतेन्द्र सिंह रावत
मा0का0 श्रेणी–I

आदित्य एल1 मिशन विभिन्न मोर्चों पर अत्यधिक महत्व रखता है:

1. वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाना: अंतरिक्ष में एक सुविधाजनक बिंदु से सूर्य के कोरोना का अध्ययन करने से सौर गतिविधियों और पृथ्वी पर उनके प्रभाव में अभूतपूर्व अंतर्दृष्टि मिलेगी। मूलभूत खगोलभौतिकी प्रक्रियाओं को समझने के लिए यह ज्ञान महत्वपूर्ण है।

2. अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी: सौर तूफान आधुनिक प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं। आदित्य एल1 के अवलोकन से महत्वपूर्ण प्रणालियों की सुरक्षा करते हुए, इन तूफानों के प्रभाव की भविष्यवाणी करने और उन्हें कम करने की हमारी क्षमता में सुधार होगा।

3. अंतरिक्ष कूटनीति: अंतरिक्ष अन्वेषण, विशेष रूप से सौर अध्ययन में भारत की सक्रिय भागीदारी, इसकी वैश्विक स्थिति को बढ़ाती है और अंतरिक्ष अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करती है।

4. तकनीकी उन्नति: आदित्य एल1 मिशन अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की शक्ति को प्रदर्शित करता है। इसमें अत्याधुनिक उपकरण शामिल हैं और यह जटिल अंतरिक्ष अभियानों को शुरू करने की भारत की क्षमताओं को प्रदर्शित करता है।

5. जलवायु अनुसंधान: सौर परिवर्तनशीलता जलवायु परिवर्तन में भूमिका निभाती है। पृथ्वी की जलवायु पर सूर्य के प्रभाव को समझना व्यापक जलवायु अनुसंधान के लिए आवश्यक है।

चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ

जबकि आदित्य एल1 मिशन भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं का एक प्रमाण है, इसे कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है:

1. तकनीकी चुनौतियाँ: सूर्य के नजदीक उपकरणों को चलाने से अत्यधिक तापमान और विकिरण के कारण तकनीकी चुनौतियाँ पैदा होती हैं। मजबूत उपकरणों का विकास और रखरखाव महत्वपूर्ण है।

2. डेटा विश्लेषण: आदित्य एल1 के उपकरणों द्वारा एकत्र किए गए विशाल मात्रा में डेटा के प्रसंस्करण और विश्लेषण के लिए उन्नत कम्प्यूटेशनल क्षमताओं और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: सौर अध्ययन के लिए अक्सर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है। भारत को डेटा साझाकरण और संयुक्त अनुसंधान के लिए वैश्विक अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए।

4. सार्वजनिक जागरूकता: सौर अध्ययन और अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान के महत्व के बारे में आम जनता के बीच जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।

निष्कर्षतः, सौर मिशन आदित्य एल1 भारत की अंतरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक महत्वपूर्ण प्रगति है, जो अपार वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावहारिक लाभ प्रदान करता है। जैसे-जैसे मिशन आगे बढ़ेगा, यह न केवल सूर्य के बारे में हमारी समझ को गहरा करेगा बल्कि हमारी तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया पर अंतरिक्ष मौसम के प्रभाव की भविष्यवाणी करने और उसे कम करने के वैश्विक प्रयास में भी योगदान देगा। सौर अनुसंधान में भारत की सक्रिय भूमिका अंतरिक्ष अन्वेषण और वैज्ञानिक उन्नति के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का उदाहरण है।

भटकता बचपन

सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

इतवार का दिन था। आफिस बन्द होने के कारण थोड़ा सुकून अनुभव हो रहा था सुबह की कुनकुनी धूप में मै अखबार लेकर इत्मिनान से बैठ कर पढ़ रही थी। वैसे ऐसी आनन्दित बेला मेरे जीवन में कम ही आती है। मै एक कामकाजी महिला हूँ इस कारण मेरी हर सुबह व्यस्तता भरी ही होती है। पति देव के भी कामकाजी होने के कारण एवं बच्चों का स्कूल होने के कारण मेरी हर सुबह **जीवन एक** संघर्ष का एहसास दिलाती रहती है। आज अवकाश होने के कारण इस दुर्लभ सुख की अनुभूति हो रही थी। मै चाय की हर चुस्की के साथ अखबार का पन्ना पलट रही थी और मसाला खबरों का आनन्द ले रही थी। उत्साहित मन खुशियों की पींगे बढा रहा था। इतवार को अखबार में मसाला थोड़ा ज्यादा ही होता है और मैं अखबार पिछले पृष्ठ से उल्टा पढती हूँ। यह मेरी आदत सी बन गयी है। मेरी चाय लगभग खत्म ही होने वाली थी तो मैं अखबार के पन्ने जल्दी–जल्दी पलटने लगी सहसा मरी नजरें तीसरे पृष्ठ पर रूक गयी। मन सहम सा गया था। मेरे शरीर में एक सिहरन उठी और मेरा शरीर कांप गया। उफ ये क्या लिखा था, यद्यपि ऐसी न्यूज पहले भी यदा कदा मैने पढ़ी थी परंतु इस बार समाचार मेरे शहर का था। मेरे घर से थोड़ी दूर रहने वाले एक कालेज के बच्चे का समाचार। उसके परिवार को मैं अच्छी तरह से नही जानती थी परन्तु आते जाते देखा तो था और उन चेहरों से मैं भली भांति परिचित जरूर थी। मुख्य हैडिंग छपी थी " प्रेमी छात्र ने प्रेमिका की हत्या कर खुद आत्महत्या की"। मेरा ह्रदय वेदना से भर गया था, मै कुर्सी में जड़ सी हो गयी थी। मेरा मन विचलित हो गया। गम के सागर में टीस की लहरें उठने लगी थी।

मन सोचने को मजबूर हो गया। अरे ये क्या हो गया है हमारे समाज को ? क्या हो रहा है इस संसार को ? क्या हो रहा है बचपन को ? क्या हो रहा है हमारी युवा पीढी को ? मुझे आज भी याद आता है कि मेरे जीवन के सबसे अच्छे समय में मेरा बचपन मेरी युवा अवस्था ही थी। पढ़ना–लिखना और खेलना कूदना बस। इसके सिवा कोई जिम्मेदारी नहीं। हम उस समय की यादों में डूबकर आज भी आनंदित हो जाते है। रोमांचित होते है। परन्तु उस लड़के की कहानी ने मेरे मन को सोचने पर मजबूर कर गया कि आखिर क्यो ? क्यों हो रहा है ऐसा ? कौन जिम्मेदार है उसके उस कदम का ? क्या सिर्फ वो लड़का या हमारा सामाजिक दृष्टिकोण। कही उसके मां बाप के पालन पोषण में कोई कमी तो नही रह गयी जो एक रिश्ता तथा कथित प्रेमी के लिए ले ली किसी की जान और अपनी भी इहलीला समाप्त कर खत्म कर गया कई रिश्ते। क्या ये भावी पीढ़ी कभी यह समझने मे सक्षम होगी कि ये सिर्फ अपने प्राण नही हरते अपितु अपने माता पिता को भी इस कृत्य के साथ एक धीमा जहर दे जाते है जो एकदम से तो उनके प्राण नही हरता वरन् धीरे–धीरे उन्हे अवसाद के सागर में भर कर उनके अंदर कई बीमारियाँ उपजा कर उन्हे भी अंततः प्राण त्यागने को मजबूर कर देता है।

एक माँ हूँ इसलिए इस बात को भली भाँति समझने में सक्षम हूँ कि संतान के बदन पर कोई काँटा भी चुभ जाय तो माँ का मन चीत्कार कर उठता है। बच्चों के किसी भी दर्द से ऐसा महसूस होता है जैसे हमारे ह्रदय को कोई मुट्ठी में भींच कर दबा रहा है या कोई नश्तर चुभा रहा हो। मन कराह उठता है परंतु इसका अहसास आजकल की युवा पीढ़ी को कहाँ है? तथाकथित मॉर्डन भी तो होती जा रही है ये आधुनिक पीढ़ी। परंतु सोच का विषय है कि क्या इसमें सम्पूर्ण दोष बच्चों का है? पहले का समय आज के समय से इतर था जब बचपन की उम्र बहुत लम्बी हुआ करती थी परंतु आज के समय में तो बचपन बहुत ही अल्प व सीमित उम्र तक सिमट कर रह गया है। वो बचपना, शरारतें तो न जाने कहाँ विलुप्त हो गयी है। बच्चों के हाथ छोटी उम्र में ही तरह–तरह के गैजेटस आ गये है। आजकल के अभिभावक भी अपने आप को तभी सफल मानते है जब वो सभी तरह के आधुनिक गैजेटस बच्चों के हाथ में थमा देते है और इसी के साथ अपने सफल वा आधुनिक होने के दंभ को संतुष्ट भी करते हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ भी सर्वत्र व्याप्त है ही, कि कैसे वो समाज में अपने आप की छवि को उत्तम दिखायेंगे कि हम अपने बच्चों की सुख सुविधाओं का पूर्णतः ध्यान रखते है। परंतु इससे पूर्व अपने

अंर्तमन में झांक कर निष्पक्ष आत्म मूल्यांकन भी आवश्यक है। क्या अपनी इसी सोच के पीछे आप भी कहीं न कहीं दोषी नही है। क्या सही उम्र में सही चीज अपने बच्चों को देना आपकी जिम्मेदारी नही है। आखिर बच्चे तो बच्चे ही है वो तो हर चीज जो अपने आस पास देखेंगे उसकी माँग करेंगे ही परंतु यह अभिभावक का ही कर्तव्य है कि वह उम्र की सीमा के तकाजों को देखते हुए ही बच्चों की माँगों की उपलब्धता कराये। आखिर अभिभावक भी बचपन की गलियों से गुजर चुके है क्या उनकी सभी माँगें प्रथम बार में ही पूरी कर दी गयी थी। नही ना, फिर इस विषय में अपने अभिभावकों से शिक्षित होने मे क्या शर्म है। क्या आप स्वंय एक अच्छी जिंदगी निर्वहन नही कर रहे फिर किस चीज की होड़?

यह तो तथ्य है जब एक बार आप बच्चों की माँग के समक्ष झुकेंगे तो यह आवश्यसम्भावी है कि आपको यह स्वतः ही हमेशा करना पड़ेगा क्योकि गैजेटस भी एक नशे की तरह हैं इसकी लत पड़ जाये तो इसे छोड़ना सरल भी नही है।

साथ–साथ यह मानने में भी मुझे गुरेज नही कि समय के साथ–साथ हमे कुछ तो बदलना भी पड़ेगा अपने जैसा पालन पोषण तो नही कर सकेंगे हम अपनी संतानों का क्योंकि पहले के समय में अभिभावकों की विवशता भी कम नही थी। संयुक्त व बड़े परिवारों का उस समय पर चलन होने के कारण वो वैसे ही बच्चों की सम्पूर्ण माँगे पूरी करने में सक्षम नहीं थे। परंतु इससे उनके बच्चों के जीवन में कोई प्रतिकूल प्रभाव तो नही पड़ा कुछ अनुकूल ही मिला उनहे जीवन में इसी के सकारात्मक प्रभाव ही तो उन्हे जीवन में सफलता के लिए प्रेरित कर पॅाये अतः बच्चों को उनकी माँग की उपलब्धता कराये परंतु एक सीमित दायरे में रहकर। बच्चों को न कहने व सुनने की आदत भी डाले यदि उन्हे हर चीज ही सरलता से प्राप्त हो गयी तो वे जीवन में किसी चीज को पाने के प्रयास व जतन का महत्व समझने से वंचित रह जायेंगे। हमेशा आपकी छाया में ही रह जायेंगे स्वतः उड़ने का प्रयास ही नही करेंगे आखिर उन्हे भी तो मेहनत के मायने सीखने होंगे।

आजकल की दिनचर्या में से बच्चों के लिए बातचीत का समय निकालना सबसे टेढी खीर है। यदि अभिभावक कामकाजी है तो उसकी संभावना और भी नगण्य हो जाती है। परंतु यदि आप बच्चों को जीवन जीने के परिपेक्ष्य में कुछ सकारात्मक व आवश्यक देना चाहते है तो कृपया अपना अमूल्य समय दें। उनसे बातचीत करते रहें व उनसे अपने जीवन के अनुभव सांझा करते रहे जिससे वह आपसे और अधिक जुड़ाव महसूस कर सकें। वो भी जान सके ये समय जो उनके जीवन में चल रहा है वो कभी उनके अभिभावकों के जीवन में भी गुजरा है तथा उनके प्रति उनका कौतूहल भी रहेगा कि उनके माता पिता ने उस समय का कैसे सामना किया। ये तो तथ्य है कि वो शत्–प्रतिशत् उसे ग्रहण नही करेंगे पर जाने अनजाने कुछ तो उससे ग्रहण करेंगे व शिक्षा लेंगे इसके अतिरिक्त जो एक अतिआवश्यक चीज जो आपको आपके बच्चों को विरासत में प्रदान करने है वो है उसे सुसंस्कारी बनाना। अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों से परिपूरित करने में लेशमात्र भी कमी ना आने दे क्योकि संस्कारवान नौनिहाल न स्वंय आपके लिए अपितु हमारे देश व देश की उन्नति व विकास के लिए भी आधार स्तंभ है। और यह आपको उन्हे सिखाने की आवश्यकता नहीं है अपितु यह तो वह आपके आचार व्यहवर से स्वयम ही ग्रहण करेंगे। याद रखिये जैसे आचार और व्यवहार से आप सुसज्जित है, जैसे आपका अपने प्रति अपने अभिभावकों के प्रति समाज के प्रति देश के प्रति सोच है वह अपने आप ही कही न कही आपके बच्चों में विकसित हो जाती है आखिर हैं तो वो आपकी परछाई। ऐसा मै अपने अनुभव से बोल रही हूँ। यद्यपि मैने अपनी बहुत छोटी आयु (15 वर्ष) में अपने माता पिता को खो दिया था परंतु आज अपने अंर्तमन में कई जगह उनका प्रतिबिंब पाती हूँ। अपने संस्कारों व व्यवहार के रूप में। शायद मेरे अवचेतन मन में उनका आचार व व्यवहार गहरा अंकित था। अतः अपने बच्चों से बातचीत करने, उनको अच्छे संस्कार देने में तनिक भी कोताही ना बरते इसके उन पर दो सकारात्मक असर होंगे एक तो आप बच्चों से अपने अनुभव सांझा कर पायेंगे जिससे वे आपके साथ अपेक्षाकृत अधिक जुड़ाव महसूस करेगे, दूसरा उनको गैजेट्स से होने वाली कई प्रकार की बीमारियों से भी बचा पाएंगे। और हाँ अपने अंदर के बचपन को जीवन की किसी भी स्थिति में मरने न दे उसे सदैव जीवंत बनाये रखे बच्चों को उनके जैसे व्यवहार से सदैव अपना बनाने की अनवरत् कोशिश जारी रखे।

यकीन माने अभिभावक होना ही अपने आप मे एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है यह आपके ऊपर ही है कि आप उनका पालन पोषण किस तरह से करते है व उनके रूप में आप समाज को कितनी बड़ी धरोहर प्रदान करते है।

****

G20 2023 में भारत की भूमिका

अरूण तेश्वर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

G20 का अध्यक्ष बना भारत अपनी पूरी शक्ति से विश्व के प्रमुख 20 देशों का नेतृत्व कर रहा है। यह प्रत्येक भारतवासी के लिए बहुत बड़ा अवसर साबित होगा। G20, या ग्रुप ऑफ 20, दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर्राष्ट्रीय मंच है। इसमें 19 देश और यूरोपी संघ शामिल हैं, जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 90% और दुनिया की दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। G20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, और 2023 में, भारत पहली बार G20 शिखर सम्मेलन का मेजबान बना है।

G20 2023 में भारत की भूमिका

2023 में G20 शिखर सम्मेलन के मेजबान के रूप में, बैठक अजेंडे और परिणाम को आकार देने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। यहाँ कुछ ऐसे क्षेत्र है जहाँ भारत के अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद है:-

जलवायु परिवर्तन और सतत् विकास

भारत ग्रीनहाउस गैसों के दुनिया के सबसे बड़े उत्सर्जकों में से एक है, और देश ने अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए महत्वकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। भारत का ध्यान विकासशील देशों को उनके जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए विकसित देशों की आवश्यकता पर केंद्रित करने पर है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी

भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी है और देश का प्रौद्योगिकी क्षेत्र हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ रहा है। G20 शिखर सम्मेलन के मेजबान के रूप में, भारत से प्रौद्योगिकी और डिजिटल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सदस्य देशों के बीच अधिक सहयोग पर जोर देने की उम्मीद है। भारत ने डाटा गोपनीयता साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है।

वित्तीय विनियमन और आर्थिक विकास

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और देश ने विकास को बढ़ावा देने के लिए हाल के वर्षों में आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला लागू की है। भारत वित्तीय विनियमन के क्षेत्र में सदस्य देशों के बीच अधिक समन्वय के लिए जोर दे रहा है और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उपायों की मांग को सशक्त कर रहा है।

2023 में G20 शिखर सम्मेलन में भारत की भूमिका बैठक के एजेंडे और परिणाम को आकार देने में महत्वपूर्ण रही है। भारत से जलवायु परिवर्तन और सतत् विकास और स्वास्थ्य और महामारी प्रतिक्रिया पर अपने प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद है। इन क्षेत्रों में भारत का नेतृत्व दुनिया के लिए एक समावेशी और टिकाऊ भविष्य बनाने में महत्वपूर्ण होगा।

G20 की बैठक का नवीनतम मुद्दा यह रहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अफ्रीकन यूनियन को आधिकारिक रूप से G20 ग्रुप में शामिल किए जाने का एलान किया है। अब G20 का नाम बदलकर G21 किए जाने की उम्मीद है। चूँकि अफ्रीकन यूनियन में 55 देश शामिल हैं और G20 में इसका शामिल होना मील का पत्थर साबित होगा। जिससे यह यूरोपीय संघ के बाद G20 के भीतर देशों का दूसरा सबसे बड़ा समूह बन जायेगा।

****

बधांणगढ़ी

बलवंत सिंह
सर्वेक्षण सहायक

बधांणगढ़ी मंदिर का नाम दो शब्दों से मिलकर बना है एक बधाण + गढ़ी बधाण का तात्पर्य काली माता और शिव का मंदिर, गढ़ी का अर्थ ऊँचाई से है जिनके संयुक्त नाम से बधाणगढ़ी मंदिर नाम पड़ा।

बधांणगढ़ी मंदिर को एक और नाम से जाना जाता है जिसका नाम दक्षिणेश्वर काली माँ है।

बधांणगढ़ी चमोली जिले के ग्वालदम नामक स्थान से मात्र 4 किमी दूरी पर स्थित सुदंर मंदिर है। मंदिर अधिक ऊँचाई पर स्थित होने के कारण सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है, आसपास के सुन्दर नजारे मंदिर पर चार चांद लगा देते है, मंदिर से नंदा देवी, त्रिशूल, पंचचुली पर्वत श्रृंखलाए दिखाई देती है।

बधांणगढ़ी मंदिर के विषय में कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण कत्युरी शासनकाल में 8 वीं से 12 वीं शताब्दी के दौरान किया गया था। मंदिर की ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 2260 मी० की ऊँचाई पर स्थित है। बधांणगढ़ी मंदिर मे हर 12 साल में एक जात का आयोजन किया जाता है, आयोजन नारायणबगड–ग्वालदम के बधांणगढ़ी मंदिर और गैरसैण ब्लाक के मल्ली स्यूणी के बीच होता है, जिसमें लगभग 22 किमी का जंगली रास्ता साथ ही खड़ी चढ़ाई (ट्रेकिंग) है, खास बात यह है कि बधांणगढ़ी मंदिर (ग्वालदम) जात और मल्ली स्यूणी (गैरसैंण ब्लाक) जात का आयोजन जंगल के रास्ते होता है। इसमे समस्त चमोली जिले और उत्तराखंड के तमाम हिस्सो से श्रद्धालु पंहुचते है। जात रात के समय जंगल के बीच में रूक जाती है। जहां को रात भर भजन और पौराणिक गीतों के साथ जात को आगे बढ़ाया जाता है और फिर आगे की ओर बढ़ाते है जो की खांकरा महादेव मंदिर की ओर जाती है। यहीं मंदिर के निकट स्थित एक विशाल मंदिर में दोनो जातो का आयोजन होता है।

रोज 5 मिनट

प्रदीप कुमार वर्मा
निजी सचिव
विशिष्ट क्षेत्र कार्यालय

प्रिय मित्रों

रोज सिर्फ 5 मिनट एक से दो बार करने से आप अपने अंदर एक अलग ही एनर्जी महसूस करेंगे और आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता 3 से 4 गुना बढ़ जाएगी। इसको आप कभी भी और कहीं भी चाहे घर में, आफिस में, पार्क में, ट्रेन में, बस में, चेयर पर, पेड़ आदि पर कर सकते हैं बशर्ते आपके दोनों हाथ किसी काम में व्यस्त न हों।

यह बहुत ही साधारण तकनीक है। हमारे जो हाथ हैं कभी–कभी हम साधारण तौर पर मुट्ठी बंद करते हैं लेकिन हम यह नहीं जानते कि इस मुट्ठी बंद करने और खोलने से हमारे अंदर कितने बदलाव होते हैं, किस तरह के केमिकल प्रतिक्रिया हमारे शरीर में होती है जो हमें डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, किडनी, हार्ट और अन्य तरह की बिमारियों से हमें दूर रखती है।

जब हम मुट्ठी बंद करते हैं तो हमारे दायें हाथ की पहली उंगली हथेली के जिस भाग को छूती है वहाँ एड्रिनल ग्लैंड के प्रेशर प्वाइंट होते हैं, मध्य उंगली किडनी के प्वाइंटस को छूती है, उसके बाद की उंगली पेन्क्रियाज और छोटी उंगली लीवर के प्वाइंट को छूती है। बायें और दाहिने हाथ में अंतर सिर्फ यह है कि बायें हाथ की छोटी उंगली हार्ट के प्वाइंट्स को छूती है और दाहिने हाथ की छोटी उंगली लीवर के प्वाइंट्स को छूती है।

यह प्रक्रिया करने से पहले आप को जहां भी सुविधा हो बैठ जाएं और अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को बंद करें और इस तरह बंद करें कि उंगलियों के जो हिस्से हथेलियों को छू रहें हों उनसे हथेलियों में दबाव महसूस हो। मुट्ठी कस कर बंद करते ही 10 तक गिनती गिनें और फिर मुट्ठी धीरे से खोलें। ऐसा रोज 5 मिनट तक 1 से 2 बार करें। योग के साथ करना हो तो मुट्ठी बंद करते समय अपनी श्वांस को भर लें और खोलते समय श्वांस बाहर निकाल सकते हैं।

आपकी मुट्ठी के अंदर आपका स्वास्थ्य छिपा हुआ है जिसको 5 मिनट भी दबाओगे तो बिमारियाँ अपने आप आपके शरीर से बाहर निकल जाएंगी।

हरिवंश राय बच्चन

तू न थकेगा कभी, तू न थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी, कर शपथ कर शपथ कर शपथ।

हो जाए पथ में रात कहीं मंजिल भी तो है दूर नहीं यह सोच थका दिन का पंथी भी,
जल्दी–जल्दी चलता है दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

जोशीमठ भू–धसाव

भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

1) वर्तमान समय मे जोशीमठ भू–धंसाव का एक बडा कारण सामने आया है, श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय की एक समिति की रिपोर्ट मे जोशीमठ में हुए भू–धंसाव के कारणों का खुलासा किया गया है, रिपोर्ट एन० टी० पी० सी की तपोवन विष्णुगाड परियोजना के लिए सुंरग खुदाई से एक्वीफर (जलभर) में हुए पंचर (छेद) को भू–धंसाव का बड़ा कारण माना गया है।
2) दूसरा बड़ा कारण जोशीमठ की भूगर्भीय संरचना और भार धारण क्षमता से अधिक निर्माण से भी भू–धंसाव की स्थित पैदा हुई है वर्तमान में हालात को देखते हुए जोशीमठ में भारक्षमता को कम करने का सुझाव दिया गया है।
3) जोशीमठ की भूगर्भीय संरचना को देखे तो यह लम्बे समय से ग्लेशियर के मलबे और बडे–बडे बोल्डरों से जोशीमठ की सतह का निर्माण हुआ है, सतह के बोल्डरों का ढलान एक और है एन०टी०पी०सी की सुरंग खुदाई के दौरान एक्वीफर में पंचर हो गया जिससे गांव तक जाने वाले जल स्त्रोत भी प्रभावित हुए।
4) जोशीमठ की भार धारण क्षमता के अनुसार भवनों का निर्माण 25 मीटर से अधिक ऊँचाई तक ही किया जाना था जबकि क्षेत्र में सात मंजिला भवनों का निर्माण कर दिया गया है।

उपरोक्त कारण जोशीमठ के भू–धंसाव कारण है।

****

जीवन में गुरू का महत्व

जसबीर सिंह
एम०टी०एस

1) हर व्यक्ति की सफलता के पीछे गुरू का हाथ होता है गुरू को भगवान से भी बढ़कर माना जाता है। गुरू को उजाले का दीप माना जाता है गुरू के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा है। गुरू के सहयोग से ही हर व्यक्ति सफल बनता है। गुरू का होना अंधकार में दीप के जैसे होता है। जो खुद जलकर दूसरों को उजागर करते है। माता के बाद दूसरा शिक्षक गुरू ही होते हैं। गुरू से ली गई शिक्षा संस्कार हमारे जीवन को आसान बना देती है।
2) गुरू ही वह व्यक्ति होता है जो खुद एक स्थान पर रहकर दूसरों को अपनी मंजिल तक पहुँचाता है। गुरू हमेशा सभी को अच्छा ज्ञान देता है। गुरू सच्चे पथ प्रदर्शक होता है। हमारे जीवन में गुरू बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

मनुष्य के लिए भगवान से भी बढ़कर गुरू को माना जाता है। क्योंकि भगवान हमें जीवन प्रदान करता है, और गुरू हमें शिक्षा देकर इस जीवन को सही ढंग से जीना सिखाते हैं। जो गुरू का मार्ग दर्शन करके चलता है। उसे जीवन में कभी ठोकरे नहीं खानी पड़ती हैं।

3) गुरू शब्द को देखा जाए तो गुरू दो शब्दों के मेल से बनता है, जिसमें पहला शब्द जिसका अर्थ होता है अंधकार और दूसरा शब्द रूप जिसका अर्थ उजियारा यानी गुरू के नाम से ही हम पहचान कर सकते हैं। कि यह हमें अंधकार से उजियारे की ओर ले जाने का कार्य करते है। गुरू हमें अंधकार रूपी इस जीवन में प्रकाश रूपी ज्ञान देते हैं गुरू हमें शिक्षा के साथ-साथ संस्कारवान तथा अनुशासित विद्यार्थी बनाते हैं।

4) व्यक्ति को जीवन में कुछ करना है तो उसे हर चीज के बारे में महसूस कराना होगा। यह कार्य सिर्फ गुरू ही कर सकते हैं। अपने शिष्य को प्रेम भाव के साथ समझा कर उन्हें अपने जीवन और भविष्य के लिए क्या उचित है। और क्या आपके भविष्य को बर्बादी की ओर ले जाता है। गुरू अनुभवी होते हैं। वे अपने अनुभव का प्रयोग कर आपको चीजों का ज्ञान देते हैं। गुरू विद्यालय में विद्यार्थियों को अनुशासन तथा शिक्षा देकर गुणवान व्यक्ति बनाता है।

5) हमारे जीवन में हर परिस्थिति में गुरू की शिक्षा हमारे लिए महत्वपूर्ण होती है। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि गुरू वह व्यक्ति होता है जो हमें ज्ञान के पथ पर लाकर खड़ा करते है। एक रूप से गुरू हमारे ड्राइवर होते हैं। जो हमें सब कुछ सिखा कर ज्ञान से परिपूर्ण बनाते हैं। शिक्षा देने वाला ही गुरू नहीं होता बल्कि गुरू वह होता है, जो हमें अपनी आवश्यकता के अनुसार हमें सिखाता है। व्यक्ति के पास गुरू होता है। तो वह व्यक्ति भाग्यशाली माना जाता है। हमारे देश में गुरू को और भी ज्यादा महत्व दिया जाता है। हमारे यहां गुरू को भगवान से भी बढ़कर माना जाता है। इसलिए कहते हैं गुरूव देवो भव हमारे देश में गुरू के सम्मान एवं महत्व को समझते हुए, मानते हुए हमारे देश में गुरू पूर्णिमा मनाई जाती है इस दिन लोग घरों में खुशियाँ मनाते हैं। तथा अपने गुरूजनों को बुलाकर उनका मान सम्मान करते हैं उन्हें भोजन कराते हैं इस दिन विद्यार्थी गुरू की सेवा कर खुद को भाग्यशाली समझते हैं। और पुण्य की प्राप्ति करते हैं।

****

लोकोक्ति

उपदेश कुमारी
सर्वेक्षक

आँख के अंधे नाम नयन सुख – नाम और गुण के विरोध होना

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे ना सारी पावेः– अधिक लालच करना अच्छा नही होता जो मिले उसी से संतोष करना चाहिए

आप मरे जग परलय – मृत्यु के बाद की चिंता नहीं करनी चाहिए

जिन ढूंढा तिन पाईयाँ गहरे पानी पैठ– परिश्रम का फल अवश्य मिलता है

होनहार बिरवान के होत चीकने पात – होनहार के लक्षण पहले से ही दिखाई पड़ने लगते है

कोयल होय न उजली, सौ मन साबुन लाई – कितना भी प्रयत्न किया जाये स्वभाव नही बदलता

इतनी सी जान, गजभर की जुबान – बहुत बढ़ बढ़ कर बाते करना

एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा – कुटिल स्वभाव वाले मनुष्य बुरी संगत में पड कर बिगड़ जाते है।

कौड़ी न हो पास, तो मेला लगे उदास :– धन के अभाव में जीवन में आकर्षण न होना ।

गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास– सिद्धांतहीन मनुष्य, अवसरवादी

गुड़ न दे तो गुड़ की सी बात तो कहे– भले ही किसी को कुछ दे पर मधुर व्यवहार करें।

न ईंट डालो ना छींटे पड़े– यदि तुम किसी को छेड़ो तो तुम्हे दुर्वचन अवश्य सुनने पड़ेंगे।

कोठी वाला रोवे, छप्पर वाला सोवे– अधिक धन चिन्ता का कारण होता है।

जाका कोड़ा, ताका घोड़ा– जिसके पास शक्ति होती है उसी की जीत होती है।

लाख जाए पर साख न जाए – धन व्यय हो जाये तो कोई बात नही पर सम्मान बना रहना चाहिए।

****

देहरादून से तुंगनाथ तक की यात्रा

नमस्कार दोस्तो,

मोहित भट्ट
डिजिटाईजर

आज मैं आप सभी को हम चार दोस्तों की देहरादून से तुंगनाथ तक की यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में प्रस्तुत करना चाहता हूं।

हम चार दोस्तों की यात्रा का आरम्भ देहरादून के काली मंदिर (रायपुर) से शुरू होती है। जिसमें हम सबसे पहले निकल पड़ते है। ऋषिकेश की ओर जहां हमें रास्ते में अनेक प्रकार के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद प्राप्त होता है। काफी आगे तक यह सिलसिला चलता रहता है और ऋषिकेश पहुंचने के बाद हम थोड़ी देर रूकते है।

थोड़ी देर रूकने के बाद हमारा अगला सफर शुरू होता है। देवप्रयाग के लिए जिसमें हमे रास्ते में अनेक प्रकार के प्राकृतिक नजारे देखने को मिले। जैसे– खूबसूरत पहाड़िया, सुंदर नदिया, घने जंगल, और गांव जिन्हें देखकर स्वर्ग सा आनंद प्राप्त होता है और ऐसे चलते–चलते हमे रास्ते में व्यासी तीन धारा जैसे छोटे–छोटे विश्राम ग्रह मिले, थोड़ी देर विश्राम करने के बाद हम पहुंचते है देवप्रयाग।

देवप्रयाग उत्तराखण्ड के पंच प्रयागों में से एक है जो कि टिहरी जिले का एक खूबसूरत स्थान है। जहां पर भारत की दो पवित्र नदियों भागीरथी व अलकनंदा नदियों का संगम स्थल है। इन दो नदियों के मिलने के बाद यह संयुक्त नदी गंगा कहलाती है। जिसमें भागीरथी को सास व अलकनंदा को बहु कहा जाता है।

देवप्रयाग के बाद हमारा अगला सफर शुरू होता है। श्रीनगर से थोड़ा दूर जाते हुए मां धारी देवी।

मां धारी देवी अपने आप में अद्भुत मंदिर है जो कि अलकनंदा नदी के तट पर स्थित है। कहा जाता है कि मां धारी देवी चारों धामों की रक्षक है। इसके बाद हम दर्शन करके पहुंच जाते है। रूद्रप्रयाग।

रूद्रप्रयाग वह स्थान है जहां पर अलकनंदा व मंदाकिनी दो नदियों का संगम स्थल है और रूद्रप्रयाग का दृश्य प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर था।

जहां पुराणों में कहा जाता है कि रूद्रप्रयाग का प्राचीन नाम 'रूद्रावत' है और रूद्रप्रयाग नाम भगवान शिव के नाम पर रखा गया है।

रूद्रप्रयाग जिले से 41 कि0मी0 दूरी तय करके हम ऊखीमठ पहुंचे, जहां हमे अपने मित्र के घर पर रहने की व्यवस्था प्राप्त हुई। अब तक शाम के 6:00 बज चुके थे। वहां थोड़ी देर आराम करने के बाद हम ऊखीमठ के ओंकारेश्वर मंदिर के दर्शन किए। जहां पर शीतकाल में छः महीने के लिए भगवान शिव की डोली केदारनाथ धाम से यहां के लिए प्रस्थान करती है और पूरे छः माह शीतकाल में यहां विश्राम करते है।

अगले दिन हमने सुबह जल्दी उठकर ऊखीमठ से 30 कि0मी0 की दूरी पर स्थित तुंगनाथ (चोपता) के लिए प्रस्थान किया।

तुंगनाथ मंदिर जो कि हमारे उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जिले में सुंदर पहाड़ों व घाटियों के बीच स्थित है। यह पंच केदारों में से एक हैं। तुंगनाथ मंदिर 3680 मी0 की ऊंचाई पर स्थित है। जो कि दुनिया का सबसे ऊंचा शिव मंदिर है और ऐसा कहा जाता है कि तुंगनाथ मंदिर एक हजार साल पुराने प्राचीन युग से संबंधित है।

इस मंदिर की नींव महारथी गांदधारी अर्जुन ने रखी थी।

तुंगनाथ मंदिर जाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बाते–

1. तुंगनाथ मंदिर की यात्रा के दौरान अपने साथ ट्रैकिंग जूते, जैकेट, पानी, और नियमित दवाईयां रख ले।
2. तुंगनाथ मंदिर तक की पैदल यात्रा 3.5 कि0मी0 है।
3. ट्रेक रूट पर आपको कोई चार्जिग प्वाइंट उपलब्ध नही है। आप अपने साथ पावर बैंक ले जा सकते है।
4. दर्शन के लिए सबसे अच्छा समय अप्रैल से जून तक होता है।
5. यहां का मौसम पल–पल बदलता रहता है।

और इस तरह हमारी यात्रा मंगलमय हुई।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

–महात्मा गांधी

प्रतिभा ईश्वर से मिलती है। आभारी रहें ख्याति समाज में मिलती है। आभारी रहें, लेकिन मनोवृत्ति और घमंड़ स्वंय से मिलते है, सावधान रहें।।

–महात्मा गांधी

सौर मिशन आदित्य एल1

सतेन्द्र सिंह रावत
मा0का0 श्रेणी–I

भारत के अंतरिक्ष अन्वेषण प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा लॉन्च किए गए इस महत्वाकांक्षी मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष में लैग्रेंज प्वाइंट 1 (एल1) नामक एक सुविधाजनक बिंदु से हमारे निकटतम तारे सूर्य का अध्ययन करना है। यह निबंध वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में भारत की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए, आदित्य एल1 मिशन के उद्देश्यों, महत्व और चुनौतियों की पड़ताल करता है।

आदित्य एल1 के उद्देश्य
आदित्य एल1 मिशन का प्राथमिक उद्देश्य सूर्य की सबसे बाहरी परत, कोरोना और पृथ्वी की जलवायु और पर्यावरण पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना है। यह मिशन कई प्रमुख प्रश्नों का उत्तर देना चाहता

2. सौर पवन: मिशन का उद्देश्य सौर वायु की उत्पत्ति और त्वरण की जांच करना है, जो सूर्य द्वारा उत्सर्जित आवेशित कणों की एक धारा है। अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान के लिए सौर पवन गुणों को समझना महत्वपूर्ण है।

3. पृथ्वी की जलवायु पर प्रभाव: आदित्य एल1 यह आकलन करेगा कि सौर ज्वालाएँ और कोरोनल मास इजेक्शन जैसी सौर गतिविधियाँ पृथ्वी की जलवायु और मौसम के पैटर्न को कैसे प्रभावित करती हैं। यह डेटा जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में सहायता कर सकता है।

4. अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी: मिशन के निष्कर्ष अंतरिक्ष मौसम की घटनाओं की भविष्यवाणी करने की हमारी क्षमता को बढ़ाएंगे जो उपग्रह संचालन, पावर ग्रिड और संचार प्रणालियों को बाधित कर सकते हैं।

****

अंग्रेजी का बुखार

जसबीर सिंह
एम०टी०एस

अब सब, को अंग्रेजी का बुखार चढ़ा है।
हर घर में इसका प्रचार बढ़ा है।
हैलो, हाय का दरबार है।
नमस्कार बेचारा हताश है।
कभी कृष्ण, कभी जॉन हुए
अब डिस्को भगवान हुए
भूल गये शुक्रिया, माफी
आज सीखते हैं थैंक–यू , सारी
पिज्जा बर्गर खाते हैं सब
गीत–गजल कुछ समझ न आए
माइकल जैक्सन सबको भाए
दूध–दही से टूटा नाता
केक टॉफी से दिल लग जाता है।
अब सब ओर अंग्रेजी की बहार
संस्कृति पर हो रहा वार।

समानता की मूर्ति (रामानुज)

समानता की प्रतिमा 11 वीं शताब्दी के वैष्णव संत रामानुजाचार्य की हैदराबाद में स्थित 216 फुट मूर्ति है। इसे रामानुज प्रतिमा भी कहते हैं। यह हैदराबाद के बाहरी इलाके रंगा रेड्डी जिले के मुचिंतल में चिन्ना जीयर ट्रस्ट के परिसर में स्थित है। इस मूर्ति को उनके जन्म के 1000 वर्ष के उपलक्ष्य में बनाया गया है। मूर्ति के निर्माण की परियोजना की परिकल्पना ट्रस्ट द्वारा रामानुज की 1000 वीं जयंती मनाने के लिए की गई थी, जिसकी अनुमानित लागत 1000 करोड़ (US$130 मिलियन) थी, इस परियोजना का एक बड़ा हिस्सा भक्तों के दान के माध्यम से भुगतान किया गया था। वैष्णव संत रामानुजाचार्य का जन्म सन् 1017 में हुआ था। वे विशिष्टाद्वैत वेदांत के प्रवर्तक थे। उनका जन्म तमिलनाडु में ही हुआ था और कांची में उन्होनें अलवार यमुनाचार्य जी से दीक्षा ली थी। श्रीरंगम के यतिराज नाम के संन्यासी से उन्होनें संन्यास की दीक्षा ली। पूरे भारत में घूमकर उन्होनें वेदांत और वैष्णव धर्म का प्रचार किया।

अरूण कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

उन्होनें कई संस्कृत ग्रंथों की भी रचना की। उसमें से श्रीभाष्यम् और वेदांत संग्रह उनके सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ रहे। 120 वर्ष की आयु में 1137 में उन्होनें देहत्याग किया। रामानुजाचार्य पहले संत थे, जिन्होनें भक्ति, ध्यान और वेदांत को जाति बंधनों से दूर रखने की बात की। धर्म, मोक्ष और जीवन में समानता की पहली बात करने वाले रामानुजाचार्य ही थे।

निर्माण प्रतिमा की आधारशिला चिन्ना जीयर ने रखी थी। प्रतिमा के नवंबर 2017 तक तैयार होने की उम्मीद थी और बाद में इसे संशोधित कर फरवरी 2019 कर दिया गया। नानजिंग स्थित कंपनी एरोसन कॉरपोरेशन को प्रतिमा के निर्माण के लिए अगस्त 2015 में अनुबंधित किया गया था। अंतिम डिजाइन मॉडल को 3डी स्कैन किया गया और इसे बनाने के लिए एरोसन कॉरपोरेशन को भेजा गया। प्रतिमा के निर्माण में 700 टन पंचलोहा, सोना, चांदी, तांबा, पीतल और जस्ता की पांच धातु मिश्र धातु द्वारा इसे चीन में बनाया गया था और बाद में 1600 अलग–अलग टुकड़ों में 54 शिपमेंट में चेन्नई बंदरगाह के माध्यम से भारत भेजा गया। श्रमिकों, इंजीनियरों और वेल्डर सहित लगभग 60 चीनी विशेषज्ञों ने साइट पर खंड़ों को इकट्ठा किया। इसे पूरा होने में 15 महीने लगे। और इसे मुचिंतल, हैदराबाद साइट पर असेंबल किया गया था। एरोसन कॉरपोरेशन ने प्रतिमा के सुनहरे रंग के लिए 20 साल की गारंटी दी। भद्रवेदी नामक प्रतिमा के नीचे की आधार इमारत 54 फीट (16 मीटर) ऊंची और तीन मंजिल ऊंची है। इमारत के ऊपर 27 फीट (8.2 मीटर) व्यास का एक कमल है, और इसे 36 हाथियों द्वारा ले जाया जाता है, जिसके ऊपर मूर्ति विराजमान है। कमल का 27 फीट का आयाम 24 तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है, और शेष 3 आत्मा, ईश्वर और गुरु का प्रतिनिधित्व करते हैं। मूर्ति में एक ठोस कोर है जो पंचलोहा शीट से घिरा हुआ है जिसकी मोटाई 10 मिमी और 20 मिमी के बीच है। आधार भवन में एक ध्यान कक्ष है जहां 120 किलो सोने से बनी रामुनुजा की 54 इंच (1.4 मीटर) की मूर्ति स्थापित है, जो उनके जीवन के वर्षों का प्रतिनिधित्व करती है। मूर्ति के चारों ओर पत्थर से निर्मित 108 दिव्यदेशम (आदर्श मंदिर) हैं।प्रतिमा का उद्घाटन 5 फरवरी 2022 को भारतीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया था। आधार भवन के अंदर छोटी स्वर्ण प्रतिमा का उद्घाटन 13 फरवरी 2022 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा किया गया था। स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची बैठी हुई प्रतिमा है। आधार भवन में एक वैदिक डिजिटल लाइब्रेरी, अनुसंधान केन्द्र, प्राचीन भारतीय ग्रंथ, थिएटर और गैलरी है। रामानुज की रचनाऐं गैलरी में प्रस्तुत की गई हैं। सनातन परंपरा के किसी भी संत के लिए अभी तक इतना भव्य मंदिर नहीं बना है। रामानुजाचार्य स्वामी पहले ऐसे संत है, जिनकी इतनी बड़ी प्रतिमा स्थापित की गई है। मंदिर का निर्माण 2014 में शुरू हुआ था। रामानुजाचार्य की बड़ी प्रतिमा चीन में बनी है। जिसकी लागत करीब 400 करोड़ रुपए है। ये अष्टधातु से बनी सबसे बड़ी प्रतिमा है। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया है। सनातन परंपरा के किसी भी संत के लिए अभी तक इतना भव्य मंदिर नहीं बना है। रामानुजाचार्य स्वामी पहले ऐसे संत है, जिनकी इतनी बड़ी प्रतिमा स्थापित की गई है। मंदिर का

निर्माण 2014 में शुरू हुआ था। मंदिर में दर्शनार्थियों को 5 भाषाओं में ऑडियो गाइड मिल सकेगी। अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु सहित एक और भाषा इसमें शामिल होगी। यहां हर तरह की सुविधा होगी। मंदिर के भीतर रामानुजाचार्य के पूरे जीवन को चित्रों और वीडियो में दिखाया जाएगा। साथ ही, दक्षिण भारत के प्रसिद्ध 108 दिव्य देशम् की रेप्लिका भी इस स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी के चारों ओर बनाई गई है।

स्टैच्यू ऑफ इक्विलिटी का डिजाइन आर्किटेक्ट और दक्षिण भारतीय फिल्मों के आर्ट डायरेक्टर आनंद साईं ने बनाया है। उनका कहना है कि इस मंदिर और स्टैच्यू ऑफ इक्विलिटी की डिजाइन पर करीब दो साल काम किया है। ये मंदिर अपनी खूबियों के कारण दुनिया के सबसे सुंदर और दुर्लभ मंदिरों में से एक है।

इसे स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी क्यों कहा गया?
रामानुजाचार्य लोगों के सभी वर्गों के बीच सामाजिक सरोकार के पैरोकार थे। उन्होनें मंदिरों को समाज में जाति या वर्ग की परवाह किये बिना सभी के लिए अपने दरवाजे खोलने के लिए प्रोत्साहित किया। यह ऐसा समय था जब कई जातियों को मंदिरों में प्रवेश करने के लिए मनाही थी। इन्होनें शिक्षा को उन लोगों तक पहुंचाने का कार्य किया जो इससे वंचित थे। रामानुज का सबसे बड़ा योगदान ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की अवधारणा का प्रचार है। जिसका अर्थ है– ''पूरी धरती एक परिवार है''।
रामानुजाचार्य ने मंदिरों के मंचों से सामाजिक समानता और सार्वभौमिक भाईचारे के अपने विचारों का प्रचार करते हुए कई दशकों तक पूरे भारत की यात्रा की। उन्होनें सामाजिक रूप से हाशिये पर पड़े लोगों को गले लगाया और शाही अदालतों से उनके साथ समान व्यवहार करने को कहा। रामानुजाचार्य ने ईश्वर की भक्ति, करूणा, विनम्रता, समानता, और आपसी सम्मान के माध्यम से सार्वभौमिक मोक्ष की बात की, जिसे जिसे 'श्री वैष्णव संप्रदाय के रूप में जाना जाता है।

वैष्णव संत चिन्ना जियर स्वामी के अनुसार Statue of Equality को रामानुजाचार्य के सामाजिक दर्शन पर पूरी मानवता को गले लगाने के सन्देश को फैलाने के लिए डिजाइन किया गया है।

श्री रामानुजाचार्य का महत्वपूर्ण योगदान

श्री रामानुजाचार्य ने भक्ति आंदोलन को पुनर्जीवित किया और उनके उपदेशों ने अन्य भक्ति विचारधाराओं को भी प्रेरित किया। जब रामानुज नवोदय युवा दार्शनिक थे तक से ही प्रकृति और उसके संसाधनों जैसे हवा, पानी और मिट्टी के सरंक्षण की उनके द्वारा अपील की गयी। रामानुज को अन्नमाचार्य, भक्त रामदास, त्यागराज, कबीर और मीराबाई जैसे कवियों के लिए प्रेरणा और आदर्श माना जाता है।

इन्हे पूरे भारत में मंदिरों में किये जाने वाले अनुष्ठानों के लिए सही प्रक्रियाओं को स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध तिरूमाला और श्रीरंगम हैं। रामानुज का प्रसिद्ध दर्शन विशिष्टाद्वैत के नाम से जाता जाता है इनके दर्शन ने शंकराचार्य के अद्वैतवाद दर्शन को कड़ी चुनौती दी। रामानुज के विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार जगत और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रहा से ही उद्भूत हुए हैं और ब्रहा से उनका उसी प्रकार का संबंध है जैसा कि किरणों का सूर्य से है। रामानुज के इस सिद्धांत में आदि शंकराचार्य के मायावाद का खंडन किया गया है। शंकराचार्य ने जगत को माया मानते हुए इसे मिथ्या बताया है, जबकि रामानुज ने अपने सिद्धांत में यह स्थापित किया है कि जगत भी ब्रहा ने ही बनाया है परिणामस्वरूप यह मिथ्या नहीं हो सकता।

रामानुज ने वैदिक साहित्य को आम आदमी तक पहुंचाने का कार्य किया। श्री रामानुजाचार्य ने नव रत्नों या नौ ग्रंथों की भी रचना की थी। उनके सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं।

श्री रामानुजाचार्य के नव रत्न

वेदांत संग्रह– विशिष्टाद्वैत के सिद्धांतों को प्रस्तुत करने वाला एक ग्रन्थ
श्री भाष्य– वेदांत सूत्र का एक विस्तृत भाष्य
गीता भाष्य– भगवत गीता पर एक विस्तृत भाष्य
वेदांत दीप– वेदांत सूत्र पर एक संक्षिप्त टिप्पणी
वेदांत सार– नए लोगों के लिए वेदांत सूत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी
शरणागति गद्यम– भगवान श्री नारायण के चरण कमलों के प्रति पूर्ण समर्पण की प्रार्थना
श्री रंग गद्यम– भगवान विष्णु के लिए आत्म समर्पण की नियमावली
श्री वैकुण्ठ गद्यम– श्री वैकुण्ठ लोक और मुक्त आत्माओं की स्थिति का वर्णन करता है
नित्य ग्रन्थ– यह भक्तों को दिन–प्रतिदिन की पूजा और गतिविधियों के बारे में मार्गदर्शन करने के लिए एक छोटी मार्गदर्शिका है।
रामानुजाचार्य (समानता की प्रतिमा) की प्रतिमा के बनने से इनकी शिक्षाओं के प्रसार को तो बल मिलेगा ही साथ ही इस क्षेत्र को धार्मिक टूरिज्म के तौर पर विकसित किये जाने में मदद मिलेगी।

****

राष्ट्रवाद मानवजाति के उच्चतम आदर्शो, सत्यम शिवम सुन्दरम से प्रेरित है– सुभाष चन्द्र बोस

क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है। जब तर्क नष्ट हो जाता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।

–श्रीमद् भगवत गीता

डी०एस०टी० (विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग) स्पोर्ट्स मीट

डी०एस०टी० (विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग) स्पोर्ट्स मीट

विश्व रक्तदाता दिवस पर राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र के अधिकारियो/कर्मचारियों द्वारा रक्तदान

सिविल सर्विसेज कैरम टूर्नामेंट, देहरादून

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, में स्वास्थ्य एवं सेहत कार्यशाला

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, में हिंदी पखवाड़ा वर्ष २०२२ में पुरस्कार वितरण एवं हिंदी पत्रिका उज्ज्याऊ का विमोचन

आजादी के 77 वर्ष पूर्ण होने पर कार्यालय परिसर में 77 वृक्षों का वृक्षारोपण

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, द्वारा आयोजित आई० एन० सी० ए० कार्यशाला

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, द्वारा आयोजित आई० एन० सी० ए० कार्यशाला

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, द्वारा आयोजित आई० एन० सी० ए० कार्यशाला

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र, द्वारा आयोजित आई० एन० सी० ए० कार्यशाला

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र में विज्ञानं दिवस का आयोजन

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र में विज्ञानं दिवस का आयोजन

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र परिसर में राजभाषा प्रतिज्ञा लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र परिसर में सतर्कता एवं जागरूकता की प्रतिज्ञा लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

गंभीर सिंह सभागार में आई० एन० सी० ए० कार्यशाला का आयोजन

स्वच्छताअभियान के अंतर्गत कार्यालय परिसर के विभिन्न स्थलों पर स्वच्छताअभियान चलते अधिकारी एवं कर्मचारीगण

झंडा मेला

झंडे जी के मेले का इतिहास 347 साल पुराना है | श्रद्धालुओ लिये लगने वाला साँझा चूल्हा झंडा जी पर चढाने वाला गिलाफ और यहाँ विदेशो से पहुँचने वाले इस मेले को और भी खास बना देती है|

सिखों के सातवे गुरु हर राय महाराज के बड़े बेटे गुरुरामराय महाराज ने वैराग्य धारण किया जिसके बाद वो संगतों के साथ भ्रमण पर निकले | वे वर्ष 1675 में चैत्र मास कृष्ण की पंचमी के दिन देहरादून पहुंचे | 1676 में उनके जन्मदिन को संगतों ने यादगार बनाये जाने को लेकर उत्सव मनाया जिससे झंडे जी के मेले की शुरुआत हुयी | तब से हर साल इस उत्सव को मेले के रूप में मनाया जाने लगा |

जब गुरु रामराय महाराज अपनी संगतो के साथ भ्रमण पर थे तो देहरादून के खुड़बुड़ा के पास गुरुरामराय महाराज ने इसी क्षेत्र में रुकने का फेसला किया, उन्होंने संगतो को भी यही रुकने का आदेश दिया| जिसके बाद उन्होंने इसी क्षेत्र को अपनी कर्मस्थली बनाया|

राजा फ़तेह शाह ने महाराजा को देहरादून में ही डेरा बनाने का अनुरोध किया जिस पर गुरु रामराय महाराज ने संगत को यहाँ रहने के लिए चारों दिशाओं में तीर चलाये एसे में महाराज के तीर यहाँ जहां तक गए, उतनी जमीन पर गुरु रामराय महाराज ने अपनी संगत को ठहरने का हुक्म दे दिया | भारी संख्या में महाराज के साथ मोजूद संगत में इस क्षेत्र में अपना डेरा बना लिया | जिसके बाद इस छोटे से गांव का नाम डेरादून पड़ा | अंग्रेजी शासन के दौरान डेरादून का नाम देहरादून हो गया |

देहरादून में झंडा जी की शुरुआत होने के बाद से ही देश भर में संगत के आने का सिलसिला शुरू हो गया भारी संख्या में श्रद्धालुओ के पहुचने के चलते भोजन व्यवस्था करना महाराज के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई |जिसके चलते उस दौरान गुरु रामराय महाराज ने दरबार में साँझा चूल्हा की स्थापना की | इससे देशभर से आने वाले श्रद्धालुओ के साथ ही महाराज के साथ रहने वाले संगत के लिए भी यही भोजन की व्यवस्था होती थी साथ ही दरबार साहिब में आने वाला कोई भी शख्स भूखा नहीं जाता था | यहाँ हर दिन हजारो की संख्या में श्रद्धालु एक छत के नीचे भोजन करते है|